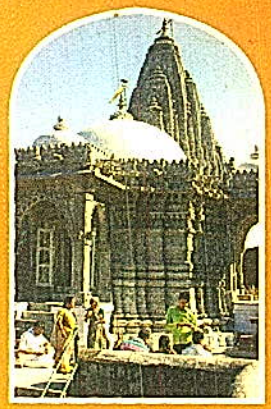

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : 5 ISSUE : 7 MUMBAI, JANUARY 2015 PAGES : 36 PRICE : ₹25

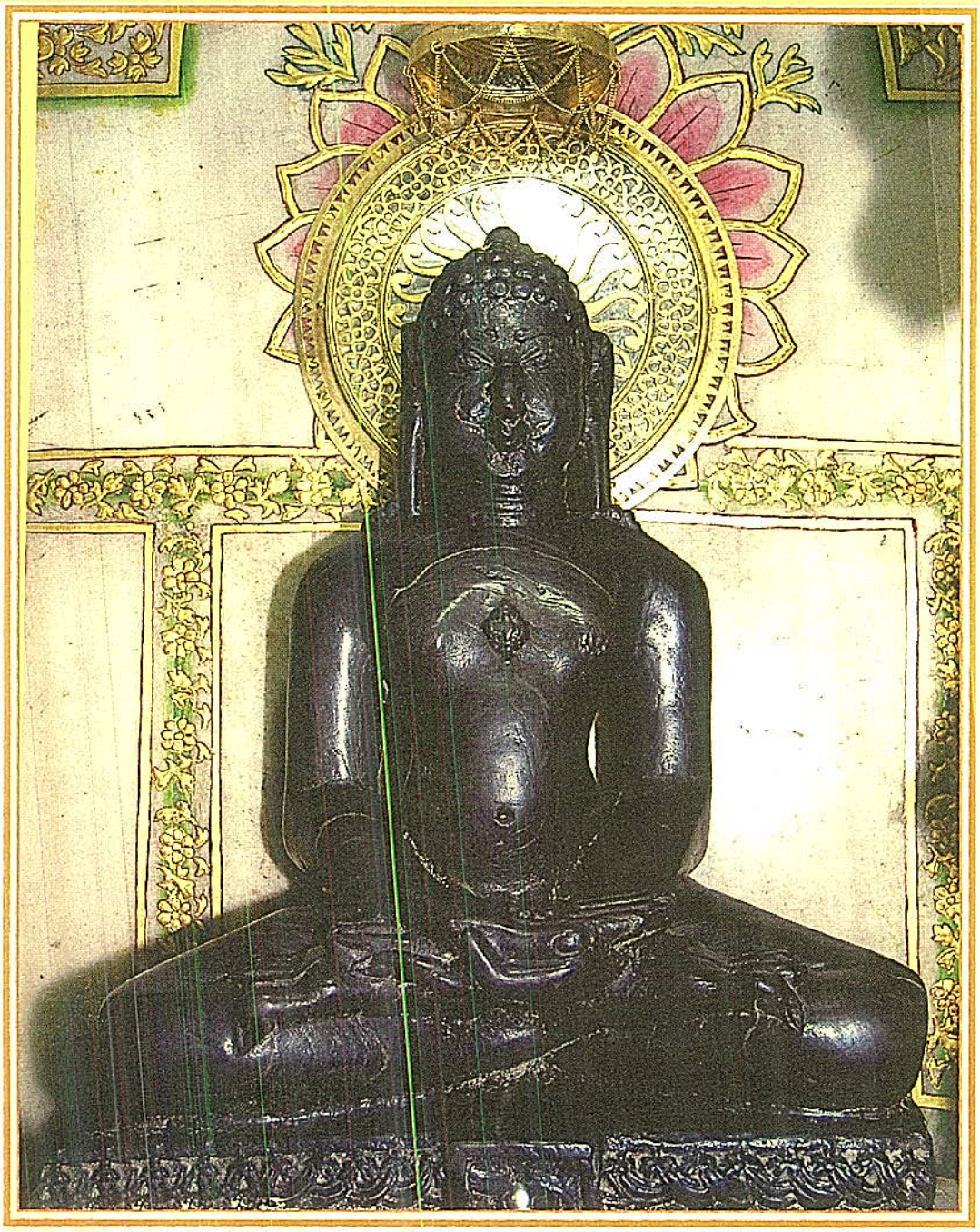

तेरहवें तीर्थंकर भगवान श्री 1008 विमलनाथ जी, कम्पिलजी क्षेत्र

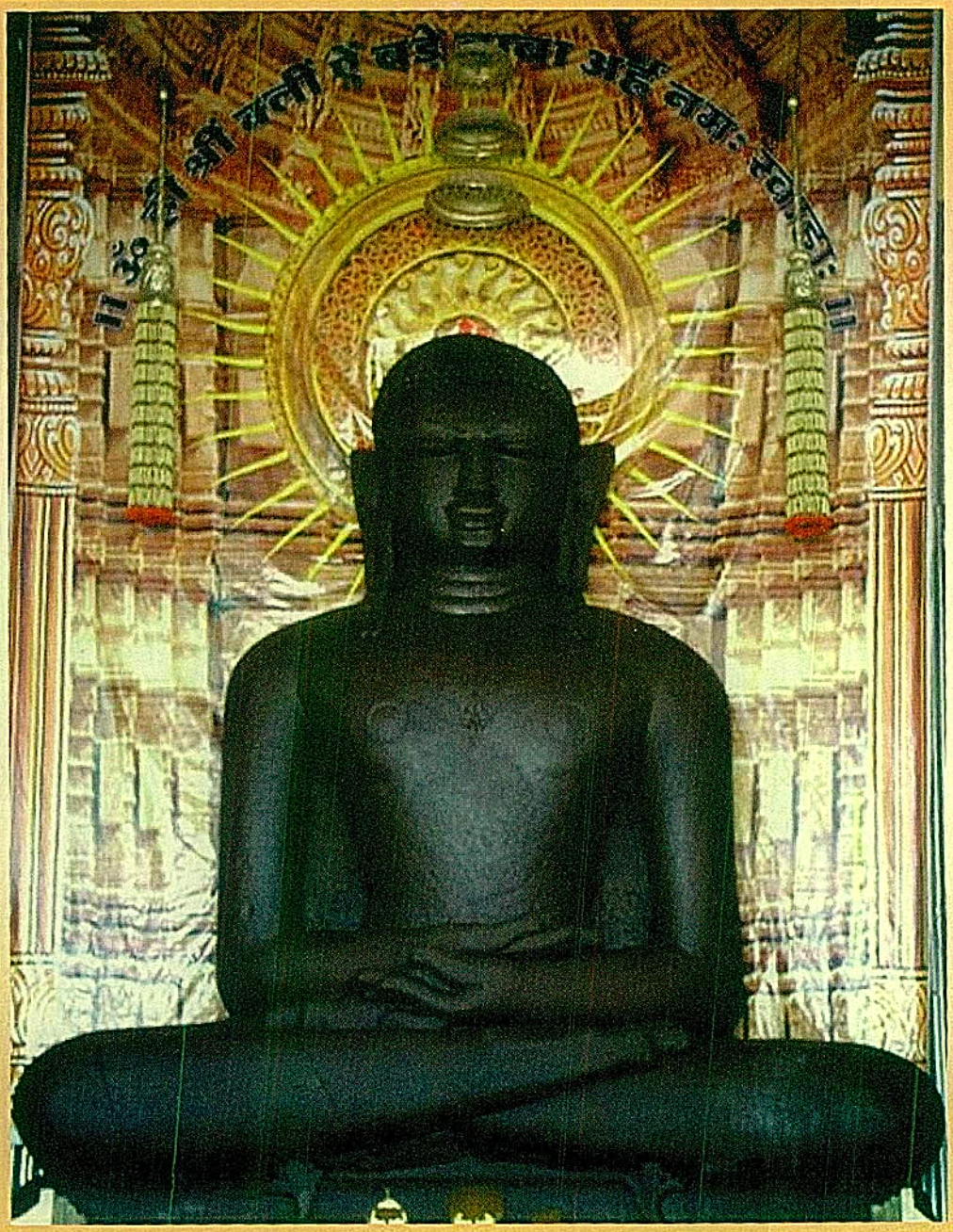

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

साधर्मी भाईयों एवं बहिनो,

जय जिनेन्द्र।

अंग्रेजी सन् 2014 विदा हो गया है, सन् 2015 का आगाज हो चुका है। कहीं बर्फबारी, कहीं ठिठुरन, कहीं ठंडी हवाओं के थपेड़े और कहीं अंधेरी रात में रोशनी एवं पटाखों की आतिशबाजी के साथ 'नये वर्ष' के आगमन पर नाचते गाते लोगों का हजूम। खाओ, पियो और नाचो-गाओ, नशे में झूम-झूम कर एक दूसरेको -हेप्पी न्यू इयर' बोलो ... यही विरासत हमें देकर चले गये अंग्रेज भारत से। और हम अंग्रेजी दासता के बंधन से मुक्त होने की जगह, उसी में रच-पचकर नये वर्ष को इसी ढंग से मनाकर अपने को धन्य मान रहे हैं।

स्वीकार करता हूँ कि न चाहते हुए भी, इस विदेशी दासता की 'बू' से, मैं भी मुक्त नहीं हो पाया हूँ और आप सभी को 'नव वर्ष 2015' के आगमन पर शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूँ। क्योंकि हमारी शिक्षा, व्यवसाय एवं सामाजिक मान्यताओं ने हमारी सोच-समझ को पलट कर रख दिया है।

फिर भी, भारतीय दर्शन, जैन दर्शन, हिन्दू दर्शन की पुरातन मान्यता के अनुसार 'नव वर्ष' का शुभारम्भ तो तब होता है जब मौसम खुशनुमा होता है, वृक्षों पर फल-फूल लदे होते हैं, धर्म और आध्यात्म के संस्कारों से 'ओत प्रोत-धार्मिक अनुष्ठानों का शुभारम्भ-देवालयों में गूंजती घंटियां एवं ओंकर ध्वनि के नारों से होता है। जमीन से लेकर आकाश भी स्वस्थ हवाओं के झोकों से हमें शुभकामनाओं से सराबोर करने को उतावला होता है। मैं सचमुच तीर्थक्षेत्र कमेटी, महापरिवार की ओर से आप सभी को ऐसे 'नववर्ष' की शुभकामनाएं - देने को उत्सुक हूँ जब आप सपरिवार,

मौसम की अनुकूलता से किसी तीर्थक्षेत्र में जाकर उत्सव मनायें एवं शुभ भावों से नववर्ष का आलिंगन करें।

ऐसी ही मंगल कामना के साथ - - -

नये वर्ष में नई पहल हो,
कठिन जिंदगी और सरल हो।
अनसुलझी जो रही पहेली,
अब शायद उसका भी हल हो।।
जो चलता है वक्त देखकर,
आगे जाकर वही सफल हो।।
नये वर्ष का उगता सूरज,
सबके लिए सुनहरा पल हो।।

जय जिनेन्द्र।

आपका ही,

सुधीर जैन

तीर्थंकर से तीर्थ की प्रवृत्ति प्रवर्तमान होता है।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 5 अंक 7 जनवरी 2015

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

काश! हम जैसे सब होते	5
जैनधर्म के 13वें तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान्	7
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रेरक विचार	9
मुनिश्री 108 अमोघकीर्तिजी मुनिराज का 34वाँ जन्म जयन्ती	13
श्रीक्षेत्र श्रणबेलगोला में चिक्कबेट्ट –चन्द्रगिरि महोत्सव	18
मुक्तागिरि में जिनबिंब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का शानदार शुभारम्भ	20
प्रतिभावान जैन छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह	22
श्री सम्मेदशिखर जी में श्री 1008 चौबीस समवशरण महामण्डल विधान	23
हमारे नये बने सदस्य	31

तीर्थ अहिंसा धर्म का आयतन है।

काश! हम जैसे सब होते

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन

हमारा भारतवर्ष पुरातन देश है। इसकी संस्कृति पुरातन है। हमारी संस्कृति ने हमें दो धाराएं दीं 1. श्रमणधारा, 2. श्रावक धारा । सद्गृहस्थ श्रावकधारा में समाहित हैं। हमारी चेतना में जीवन जीने की कला और जीवन जीने का सूक्ष्मतम बोध समाया हुआ है। आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बन, सादगी इसके आधार बिन्दु हैं। हम परम्पराओं के पोषक अवश्य हैं किन्तु नयी परम्पराएं गढ़ना और सड़ी–गली परम्पराएं तोड़ना भी हमारे स्वभाव में है इसलिए कोई हमें दकियानूस नहीं कह सकता। हम पाश्चात्य से प्रभावित अवश्य हुए क्योंकि हमारे शासकों ने हमारे सामने 'फॉरेन क्रेज' (विदेशी प्रभाव) सामने रखा मानो विदेश जाना स्वर्ग जाना हो किन्तु हमें आज भी अपना देश और अपना धर्म प्यारा है । हमें विदेशी संस्कृति और विदेशी भाषा के प्रति आदर के दीनता और हीनता बोध से निकलकर महानता और प्रधानता के गौरव को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। अपनी भाषा प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, मराठी, गुजराती आदि को अपनाना चाहिए।

हमने तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर तीर्थंकर महावीर स्वामी तक के अनुशासन को जाना और माना है। भरत जैसा प्रतापी चक्रवर्ती देखा जिसके नाम पर इस 'अजनाभ वर्ष' का नाम भारतवर्ष पड़ा। हमने बाहुबली जैसा महान् स्वावलम्बी, निर्भीक, पिताश्री एवं ज्येष्ठ भ्राता के प्रति आदर रखने वाला तपी राजा देखा है, भामाशाह जैसा राष्ट्रभक्त दानी देखा है, श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैसा निश्छल व्रती, संकल्प का धनी, शिक्षा प्रेमी संत देखा है,। आचार्य श्री शांतिसागर जी, आचार्य श्री आदिसागर जी, आचार्य श्री शांतिसागर (छाणी), आचार्य श्री वीरसागर जी, आचार्य श्री शिवसागर जी, महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज, आचार्य श्री धर्मसागर जी, आचार्य श्री अजितसागर जी, आचार्य श्री सूर्यसागर जी जैसे तपस्वी संत देखे हैं और वर्तमान में भी हम श्रमण संस्कृति की धारा को वृद्धिंगत करने वाले संत शिरोमणि चारित्रवान् आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, प्राकृत भाषा के उत्थान के प्रति समर्पित आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज, धर्मरक्षक आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज और मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज, मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज जैसे धर्मतीर्थ, ज्ञानतीर्थ प्रतिष्ठापक, जीर्णोद्धारक, श्रमण संस्कृति प्रतिष्ठापक संत देख रहे हैं।

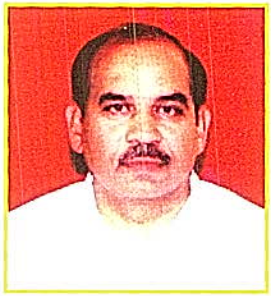

जैन समाज का इतिहास दानवीरों से सदा गौरवान्वित रहा है। आज भी जैन समाज में दानवीरों की, भामाशाहों की कमी नहीं है। हमें इस बात का गर्व है कि हम कभी आक्रान्ता नहीं रहे, बर्बर नहीं हुए, हिंसक नहीं हुए। युद्ध के स्थान पर हमने सदा शान्ति का पक्ष लिया है। हमारा ज्ञान–विज्ञान कौशल, जैनदर्शन, अनेकान्तवाद, सर्वोदय का सिद्धान्त समेटे हुए सम्पूर्ण आगम हमारी अंतरात्मा को जगाने में समर्थ है जिससे हमें परमात्मपने का बोध होता है। हम कभी भी मिथ्यावर्ग से ग्रस्त नहीं हुए, शत्रु की ताकत देखकर पस्त नहीं हुए, न्याय का मार्ग कभी छोड़ा नहीं, राष्ट्र से विद्रोह कभी किया नहीं। हम आधुनिक सदा रहे किन्तु गुणात्मक विचारधारा को न हमने कभी छोड़ा, न उसे पुराना पड़ने दिया बल्कि उसके अनुसरणकर्त्ता (आबालवृद्ध महिला–पुरुष) सदा बने रहे। हमने सफलता को संस्कारों से जोड़े रखा और हर रास्ता बनाया जो अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह की अवधारणा को मजबूत करे।

हमारी संस्कृति पुरुषार्थ की रही, प्रयत्न और प्रयास की रही इसलिए कभी किसी के सामने हमने हाथ नहीं फैलाये। हमने अपनी आवश्यकताएं सीमित रखीं और परमुखापेक्षिता को पास में फटकने नहीं दिया। हमें पता था कि जो जितना अधिक त्याग करेगा वह उतना ही अपना आत्मा/परमात्मा के निकट होगा। हमारा विश्वास मनुष्य बनाने का रहा है जो दया से युक्त हो, जिसका दान में विश्वास हो और जो दम (संयम) का पक्षधर हो। यदि किसी को 'आर्ट ऑफ लिविंग' सीखनी हो तो वह हम जैनों से सीख सकता है।

हमारे श्रमणों के उपकरणों में ही संसार का महान् दर्शन समाया हुआ है। मयूर पिच्छि हमें बताती है कि जीवदया के बिना एक कदम भी मत चलो। कमण्डलु कहता है कमाओ अधिक खर्च कम करो(ऋण लेकर घी मत पीओ)। शास्त्र कहते हैं कि जो भी बोलो, शास्त्र सम्मत बोलो।

दान की दो बूंदें भी सागर भर सकती हैं। हमने चलना सीखा है, थकना नहीं। गीतकार शैलेन्द्र ने लिखा है कि–

चलते चलते थक गया, साँझ भी ढलने लगी।

यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो तो सबके प्रति क्षमामय व्यवहार करो (तिरुवल्लूर)

तब राह खुद मुझे, बाँहों में लेकर चलने लगी।।

रोजन विलियम्स ने कहा कि–"अपनी सामर्थ्य का पूर्ण विकास न करना सबसे बड़ा अपराध है। जब आप पूर्ण क्षमता के साथ कार्य करते हैं तब आप दूसरों की सहायता करते हैं। मानव जीवन में करुणा महत्त्वपूर्णकारक है जिससे मनुष्य की उदात्तवृत्ति का पता चलता है। मन में उठने वाला दया का भाव आत्म परिचायक है और जब यह मन में उठे तो स्वपरहित होना ही है। इसी से व्यक्ति के समाजबोध का पता चलता है। बड़े आदमी का अनुग्रह यही है कि वह छोटों पर करुणाभाव रखे, उन्हें आश्रयप्रदान करे। जब हनुमान जी ने राम और लक्ष्मण को अपने कन्धों पर बिठा लिया और खड़े हुए तो श्रीराम गिरने लगे। श्रीराम ने कहा–"हनुमान हम गिर रहे हैं ?" तब हनुमान ने कहा–प्रभु, आप मेरा मस्तक पकड़ लीजिए। श्रीराम ने ऐसा ही किया और सँभल गये। तब हनुमान जी ने कहा–प्रभु, हम सामान्य जन तो किसी को पकड़ते हैं तो छोड़ने के लिए; किन्तु आप जिसे पकड़ते हैं उसे कभी छोड़ते नहीं अतः आज आपके पकड़ने से मैं कृतार्थ हो गया। इस प्रसंग पर मेरा कविमन कहता है कि–

धर्म के आचरण से आत्मा का श्रृंगार करना चाहिए।
क्षमा की औषधि से क्रोध का उपचार करना चाहिए।।
धरती अंबर तो सदा ठहरे हैं अपनी ही जगह,
देह को छोड़ आत्म से आत्म का उद्धार करना चाहिए।।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को आपके सहयोग की अपेक्षा–

जैन समाज के पास भारतवर्ष में सम्पूर्ण विश्व के लोगों को विशेष आकर्षित करने के लिए तीर्थक्षेत्रों की विशाल श्रृंखला है जहाँ पत्थर भी मानो मोम बनकर मूर्ति शिल्प के रूप में ढलकर परम शांतिमय वीतरागता को अभिव्यंजित कर कर रहे है। जैनों के शिल्पों का श्रृंगार भी काम के अंगार को शांत करने में समर्थ दिखायी देता है। खजुराहो के विश्वप्रसिद्ध जैन मंदिर इसके प्रमाण हैं। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में चक्रवर्ती, कामदेव, तीर्थंकर श्री शांतिनाथ, श्री कुन्थुनाथ, श्री अरनाथ के जिनबिम्ब किसे शांति नहीं प्रदान करते ? उच्च पर्वत श्रृंगों पर विद्यमान तीर्थक्षेत्र, मंदिर, मूर्तियां, शिलालेख, मानस्तंभ आदि अपने आप में बेजोड़ हैं। जब जैनेतर इन्हें देखते हैं तो आश्चर्य करते हैं और एक प्रकार से हम से ईर्ष्या करते हैं कि अरे, आपके पास कितना वैभव है ? लेकिन जब हम देखते हैं कि यह असुरक्षित हैं तो लगता है कि गुनहगार हम ही हैं जिन्होंने इस विरासत को संभाला नहीं। हम सरकार से उम्मीद करें भी तो वह पूरी नहीं होगी। एक प्रकार का धार्मिक द्वेष जैनों के प्रति कतिपय लोगों में सदा से रहा है और आज भी उनके वारिस उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे हैं। इसे वैचारिक आंदोलन के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। इस ओर हमारे संतों और विद्वानों को आगे आना चाहिए तथा वैचारिक प्रवाह से अपने धर्म की अच्छाईयों से परिचित कराना चाहिए। यह एक दिन का काम नहीं, एक व्यक्ति का काम नहीं बल्कि पूरा समाज इसमें जुड़े तभी सफलता मिलेगी। हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि प्रत्येक जैन का पड़ोसी अपने आपको जैन भले ही न कहे किन्तु जैनों जैसा आचरण अवश्य करे।

भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी शताधिक वर्षों से तीर्थक्षेत्रों की सेवा कर रही है। वर्तमान अध्यक्ष श्रीमान् सिंघई सुधीर जैन के नेतृत्व में सम्पूर्ण कमेटी प्राणपण से तीर्थ रक्षा संकल्पित है। समाज को चाहिए कि वह अपने विधान, पंचकल्याणक महोत्सवों में तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग हेतु आमंत्रित करे और इस बात के लिए समाज को प्रेरित और शिक्षित करे कि उसकी पहचान तीर्थक्षेत्रों से है और उसका दायित्व है कि वह तीर्थ संरक्षण में सहभागी बने। क्या आप ऐसा करेंगे या आप कुछ ऐसा कर रहे हैं; इससे हमें अवगत अवश्य करायें।

डा० नीलम जैन भारत सरकार राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक आयोग द्वारा महाराष्ट्र राज्य समन्वयक बनीं

पुणे। भारत सरकार राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग नई दिल्ली द्वारा जैन समाज की प्रख्यात विदुषी, साहित्यकार एवं समाज सेवी डॉ० नीलम जैन को महाराष्ट्र राज्य स्टेट समन्वयक नियुक्त किया गया है, उनका नियुक्ति आदेश १ वर्ष रहेगा, उक्त विभाग मानव संसाधन मंत्रालय से सम्बद्ध रहेगा।

डा० जैन पूरे महाराष्ट्र के H.R.O. मंत्रालय, शैक्षिणक संस्थान का कभी भी आकस्मिक निरीक्षण कर उसकी रिपोर्ट दिल्ली को प्रेषित करेगीं।

उनकी नियुक्ति १७ दिसम्बर २०१४ से प्रभावशील हो गई है।

डा० नीलम जैन की नियुक्ति पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी महापरिवार हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती है।

सभी तीर्थ हमें आत्मोन्नति की प्रेरणा देते हैं।

जैनधर्म के 13वें तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान्

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. 09826565737

विमल शब्द में प्रतिबिम्बित होता है विमल जगत्।
विमलनाथ के चरण पकड़ लो होगा विजित जगत्।।
नहीं मैल का लेश जितेन्द्रिय आतम विमल अमल।
तेरहवें तीर्थंकर जिन की 'भारती' पूजा करे जगत्।।

जैनधर्म के 13वें तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान् सम्पूर्ण जगत् को 'विमल' बनाने के लिए अपनी दिव्य ध्वनि से संसार की असारता को दिग्दर्शित कर आत्मा को परमात्मा बनाने की मंगल प्रेरणा देते हैं। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर प्राणी 'समल' से 'विमल' हो जाते हैं, आत्महित करते हैं।

पश्चिम धातकी खण्ड द्वीप में मेरुपर्वत से पश्चिम की ओर सीता नदी के दक्षिण तट पर स्थित रम्यकावती देश का राजा पद्मसेन प्रजा के लिए कल्पवृक्ष के समान इच्छित फल देने वाला था। उसके नीतिपूर्ण प्रजापालक स्वरूप की स्थिति यह थी कि–

नाक्रामति प्रजा न्यायं तां नाक्रमति भूपतिः।
तं त्रिवर्गं त्रिवर्गस्य नान्योन्यातिक्रमः क्वचित्।।

अर्थात् वहाँ की प्रजा कभी न्याय का उल्लंघन नहीं करती थी, राजा प्रजा का उल्लंघन नहीं करता था, धर्म, अर्थ, काम रूप त्रिवर्ग राजा का उल्लंघन नहीं करता था और त्रिवर्ग परस्पर एक–दूसरे का उल्लंघन नहीं करता था।

राजा पद्मसेन ने एक दिन प्रीतिकर वन में स्वर्गगुप्त केवली के समीप धर्म का स्वरूप और अपने दो भव शेष जानकर अपने पुत्र 'पद्मनाभ' को राज्य सौंपकर दीक्षित हो उत्कृष्ट श्चरण प्रारंभ किया और ग्यारह अंगों का अध्ययन कर दर्शनविशुद्धि आदि सोलह कारण भावनाओं के भावन से तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया था, अन्त समय में चार आराधनाओं की आराधना पूर्वक मरण कर सहस्रार स्वर्ग में सहस्रार नामक इन्द्रपद प्राप्त किया और सुखपूर्वक अठारह सागर की आयु पूर्ण की।

इधर भरतक्षेत्र के काम्पिल्य (कम्पिला) नगर में तीर्थंकर ऋषभदेव के वंशज (इक्ष्वाकुवंशी) 'कृतवर्मा' राजा की रानी 'जयश्यामा' ने ज्येष्ठ कृष्ण दशमी को रात्रि के पिछले प्रहर में उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के रहते सोलह स्वप्न देखे, उसी समय उसने अपने मुख में प्रवेश करता हुआ हाथी देखा। प्रातः राजा से इन स्वप्नों का फल पूछा तो राजा ने बताया कि हे महारानी जयश्यामा! आप तीर्थंकर पुत्र की माता बनोगी। इस तरह सहस्रार स्वर्ग के इन्द्र का जीव महारानी 'जयश्यामा' के गर्भ में अवतरित हुआ। देवों ने आकर गर्भकल्याणक महोत्सव मनाया।

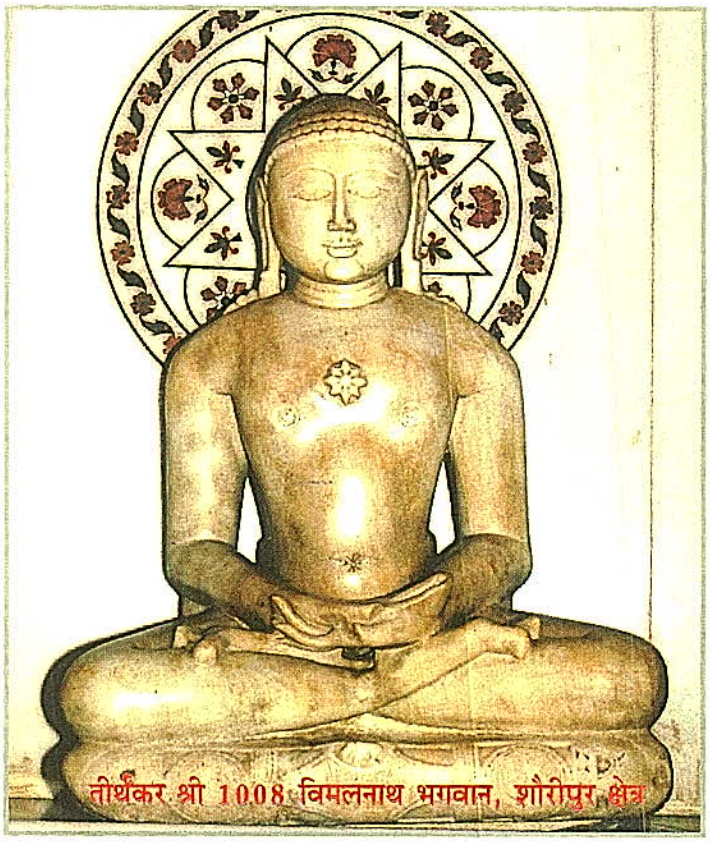
तीर्थंकर श्री 1008 विमलनाथ भगवान, शौरीपुर क्षेत्र

नौ माह व्यतीत हो जाने पर महारानी जयश्यामा ने माघ शुक्ल चतुर्थी (अथवा चतुर्दशी) के दिन अहिर्बुध्न योग में जिस महान् बालक को जन्म दिया वह जन्म से ही मति, श्रुत, अवधि; तीन ज्ञान का धारी, जगत् पूज्य और 1008 शुभ लक्षणों से सुशोभित था। सौधर्म इन्द्र ने तीर्थंकर–शिशु के जन्म को अपने कम्पित आसन से जाना और वह देव–परिकर के साथ भगवान् का जन्मकल्याणक महोत्सव मनाने काम्पिल्य नगरी में राजा कृतवर्मा के महल में आया और उस शिशु को ऐरावत हाथी पर बिठाकर सुमेरु पूर्व की पाण्डुक शिला पर ले गया। वहाँ क्षीरसागर के जल से उनका 1008 कलशों से अभिषेक किया और उनका नाम श्री विमलवाहन रखा तथा अष्ट प्रासुक द्रव्यों से पूजा की।

तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान् के तीर्थ के बाद 30,000 वर्ष बीत जाने और पल्य के अंतिम भाग में उनका जन्म हुआ था। उनकी आयु भी इसी अन्तराल में सम्मिलित थी। उनकी आयु साठ लाख वर्ष, शरीर साठ धनुष ऊँचा था, पन्द्रह लाख वर्ष कुमार काल बीत जाने पर उनका राज्याभिषेक हुआ, कान्ति सुवर्ण के समान, चिन्ह शूकर था। आचार्य श्री गुणभद्र कृत

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

'उत्तरपुराण' के अनुसार–

लक्ष्मीः सहचरी तस्य कीर्तिर्जन्मान्तारागता।
सरस्वती सहोत्पन्ना वीरलक्ष्म्या स्वयं वृतः।।
गुणाः सत्यादयस्तस्मिन् वर्द्धन्ते स्म यथा तथा।
मुनीन्द्रैरपि सम्प्रार्थ्या वर्णना तेषु का परा।।

अर्थात् लक्ष्मी उनकी सहचारिणी थी, कीर्ति जन्मान्तर से साथ आयी थी, सरस्वती साथ ही उत्पन्न हुई थी और वीर लक्ष्मी ने उन्हें स्वयं स्वीकृत किया था। उस राजा में जो सत्यादि गुण बढ़ रहे थे वे बड़े–बड़े मुनियों के द्वारा भी प्रार्थनीय थे। इससे बढ़कर उनकी और क्या स्तुति हो सकती थी ?

उन्होंने राज्यभोग के साथ कामभोग भी किया। इस तरह भोगोपभोग के साथ तीस लाख वर्ष व्यतीत होने के बाद एक दिन मेघ को विच्छिन्न होते देखकर उन्हें संसार की असारता का ज्ञान हुआ और उन्होंने संसार से मुक्ति हेतु जिनदीक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया। उत्तरपुराण में वैराग्य का कारण हेमन्त ऋतु में बर्फ की शोभा को देखते ही तत्क्षण विलीन होना माना है। लौकान्तिक देवों ने आकर उनके वैराग्यमय विचार की पुष्टि एवं अनुमोदना की। वैराग्य का दृढ़ निश्चय जानकर सौधर्म इन्द्र देव परिकर सहित आया और देवदत्ता नामक पालकी में भगवान् को विराजमान किया। सर्वप्रथम भूमिगोचरी मनुष्यों ने पालकी उठायी, देवों ने सहयोग किया। इस तरह उन्होंने कम्पिला के समीपवर्ती सहेतुक वन में जाकर जम्बूवृक्ष के नीचे माघ शुक्ल चतुर्थी के दिन पंचमुष्टि केशलोंच कर एक हजार राजाओं के साथ दिगम्बर जिन दीक्षा ग्रहण कर ली और ध्यानस्थ हो गये। दीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान की प्राप्ति हुई। द्वितीय/तृतीय उपवास के बाद वे आहार के लिए निकले। उन्होंने नन्दनपुर में राजा कनकप्रभु के यहाँ नवधा भक्तिपूर्वक गो–क्षीर में निष्पन्न अन्न (खीर) का आहार ग्रहण किया। आहार के परिणाम स्वरूप दाता के घर पंचाश्चर्य प्रकट हुए। तीन वर्ष की घोर तपस्या के पश्चात् उन्हें पौष शुक्ल दशमी (उत्तरपुराण के अनुसार माघ शुक्ल षष्ठी) के अपराह्न में उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के रहते सहेतुक वन में जम्बूवृक्ष के नीचे चार घातिया कर्मों का नाश होने पर केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। देवों ने आकर केवलज्ञान महोत्सव मनाया और भगवान् के चरण कमलों की पूजा की। देवों द्वारा पूजित होने के कारण वे देवाधिदेव कहलाए।

इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समोशरण की रचना की। देव दुन्दुभि आदि अष्टप्रातिहार्य प्रकट हुए। केवली/सर्वज्ञ/अरहन्त जिन विमलनाथ भगवान् गंध कुटी के मध्य सिंहासन के ऊपर अंतरिक्ष में विराजमान हुए। उनके प्रमुख गणधर मन्दर बने। वे कुल 55गणधरों से युक्त थे।

उनके छः योजन विस्तृत समोशरण में ग्यारह सौ पूर्वधारी, 32,530 शिक्षक, 4,800 अवधिज्ञानी, 5,500 केवलज्ञानी, 9,000 विक्रियाऋद्धिधारक, 5,500 मनःपर्ययज्ञानी, 3,600 वादी; इस तरह 68,000 मुनि तीर्थंकर भगवान् की स्तुति करते थे। पद्मा सहित 1,03,000 आर्यिकाएं थीं। 1,00,000 श्रावक तथा, 4,00,000 श्रविकाएं थीं। मुख्य श्रोता 'राजा पुरुषोत्तम' थे। असंख्यात देव–देवियां और संख्यात तिर्यंच उनके समोशरण में थे। उनका केवल्यकाल 1499997 वर्ष का था।

तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान् ने समोशरण में दिव्यध्वनि के माध्यम से धर्म का उपदेश दिया। हिंसा को पाप बताया, अहिंसा को जीवन और जीवों के लिए हितकारी बताया। अपरिग्रह उनकी काया से ही प्रकट हो रहा था। वीतरागता उनके उपदेशों में झलक रही थी। आचार्य श्री गुणभद्र ने लिखा है कि–

श्रद्धानबोधरदनं गुणपुण्यमूर्तिं–माराधना चरणमायतधर्महस्तम्।
सन्मार्गवारणमधारिमभिप्रचोद्य, विध्वंसनाद्विमलवाहनभाहुरेनम्

अर्थात् सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान ही जिसके दो दाँत हैं; गुण ही जिसका पवित्र शरीर है, चार आराधनाएँ ही जिसके चरण हैं और विशाल धर्म ही जिसकी सूँड है; ऐसे सन्मार्ग रूपी हाथी को पाप रूपी शत्रु के प्रति प्रेरित कर भगवान् विमलवाहन ने पाप रूपी शत्रु को नष्ट किया था इसलिए ही लोग उन्हें विमलवाहन (विमलं वाहनं यानं यस्य सः विमलवाहनः) कहते थे।

इस तरह धर्मोपदेश पूर्वक विहार करते हुए तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान् अंत में सम्मेदशिखर पहुंचे वहाँ उन्होंने एक माह का योग निरोध किया। 8,600 मुनियों के साथ प्रतिमायोग धारण किया। अनन्तर आषाढ़ कृष्ण/शुक्ल अष्टमी के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र में प्रातःकाल समुद्घात कर सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती नामक शुक्ल ध्यान धारण कर खड़गासन से निर्वाण को प्राप्त किया। सौधर्म इन्द्रादि देवों ने आकर भगवान् का निर्वाण कल्याणक मनाया और अग्निकुमार देवों ने केश और नख साथ मायामयी शरीर का निर्माण कर अग्निसंस्कार के साथ अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न की।

श्री विमलनाथ भगवान् के तीर्थ में धर्म और स्वयंभू नाम के बलभद्र तथा नारायण हुए थे। जो प्राणी अपने समस्त दोषों को नष्ट करना चाहते हैं, अपनी निर्मल आत्मा को प्राप्त करना चाहते हैं वे श्री विमलनाथ भगवान् का भक्तिपूर्वक स्मरण करें तथा उनके अनुसार ही तपश्चरण करें, ध्यान करें, पवित्र भावना भायें तो वे भी मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। उनके उपदेश आज भी सार्थक हैं। हम सबको कम्पिल जी (वर्तमान में ग्राम–कम्पिल, तहसील–कायमगंज, जिला–फर्रूखाबाद, उ.प्र.) तीर्थ की वंदना अवश्य करना चाहिए जहाँ भगवान् श्री विमलनाथ के चार कल्याणक हुए थे। भगवान् श्री विमलनाथ की यहाँ दो फुट अवगाहना वाली पद्मासन प्रतिमा स्थित है।

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में विदिशा में आयोजित तत्त्वचर्चा संगोष्ठी में वरिष्ठतम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रेरक विचार

सम्यक्त्वाचरण परम्परा से मोक्षमार्ग

सम्यक्त्वाचरण परम्परा से मोक्षमार्ग है, मोक्ष में साधक है, वह चारित्र से अलग नहीं है। सम्यक्त्वाचारण में आचरण के साथ सम्यक्त्व जुड़ा है। सम्यग्दृष्टि का जो आचरण है वह सम्यक्त्वाचरण है; ऐसा अष्टपाहुड (चारित्तपाहुड, गाथा–8,9) में आया है कि–

तं चेव गुणविसुद्धं जिणसम्मत्तं सुमुक्खठाणाय।
जं चरद णाणजुत्तं पढमं सम्मत्तचरणचारित्तं।।
सम्मत्तचरणसुद्धा संजमचरणस्य जइ व सुपसिद्धा।
णाणी अमूढदिट्ठी अचिरे पावंति णिव्वाणं।।

अर्थात् निः शंकितादि गुणों से विशुद्ध वह सम्यक्त्व ही जिनसम्यक्त्व कहलाता है तथा जिन सम्यक्त्व ही उत्तम मोक्ष रूप स्थान की प्राप्ति के लिये निमित्तभूत है। ज्ञान सहित जिन सम्यक्त्व का जो मुनि आचरण करते हैं वह पहला सम्यक्त्वाचरण नाम का चारित्र है।

जो सम्यक्त्वाचरण से शुद्ध हैं अर्थात् निर्दोष सम्यग्दर्शन के धारक हैं, संयमाचरण से अतिशय प्रसिद्ध हैं अर्थात् अत्यन्त निर्दोष चारित्र के धारक हैं, सम्यग्ज्ञानी हैं और अमूढ़दृष्टि हैं अर्थात् विवेकपूर्ण दृष्टि से युक्त हैं, वे शीघ्र ही निर्वाण को प्राप्त होते हैं।

अनन्तानुबन्धी बहुत अभद्र है। उसका संसार से सम्बन्ध है। आचार्य श्री समन्तभद्र ने युक्त्यनुशासन (श्लोक–5) में लिखा है कि–

काले कलिर्वा कलुषाशयो वा,
श्रोतुः प्रवक्तुर्वचऽनानयो वा।
त्वच्छासनैकादि पतित्व लक्ष्मी,
प्रभुत्वशक्तेरपवाद हेतुः।।

अर्थात् हे वीर जिन! आपके शासन में, अनेकान्तात्मक मत में (निःश्रेयस और अभ्युदय रूप) लक्ष्मी की प्राप्ति का कारण होने से एकाधिपतित्व रूप लक्ष्मी का, सभी अर्थ क्रियार्थी जनों के द्वारा अवश्य आश्रयणीय रूप सम्पत्ति का स्वामी होने की जो शक्ति है आगमान्विता युक्ति के रूप में सामर्थ्य है उसके अपवाद का, एकाधिपत्य प्राप्त न कर सकने का कारण एक तो कलिकाल है, जो कि साधारण बाह्यकारण है, दूसरा प्रवक्ता का वचनानय है, आचार्य प्रवक्तृ वर्ग का प्रायः अप्रशस्त–निरपेक्ष नय के साथ वचन व्यवहार है अर्थात् सम्यक् नय विवक्षा को लिये हुए उपदेश का न देना है; जो कि असाधारण बाह्य कारण है और तीसरा श्रोता का कलुषित आशय है। दर्शनमोह से प्रायः आक्रान्त चित्त है; जो कि अन्तरंग कारण है।

ध्यान रहे व्यापार स्थल अलग रहता है, कबाड़घर अलग रहता है। द्वितीय और तृतीय गुणस्थान में पाँच भाव नहीं हैं,

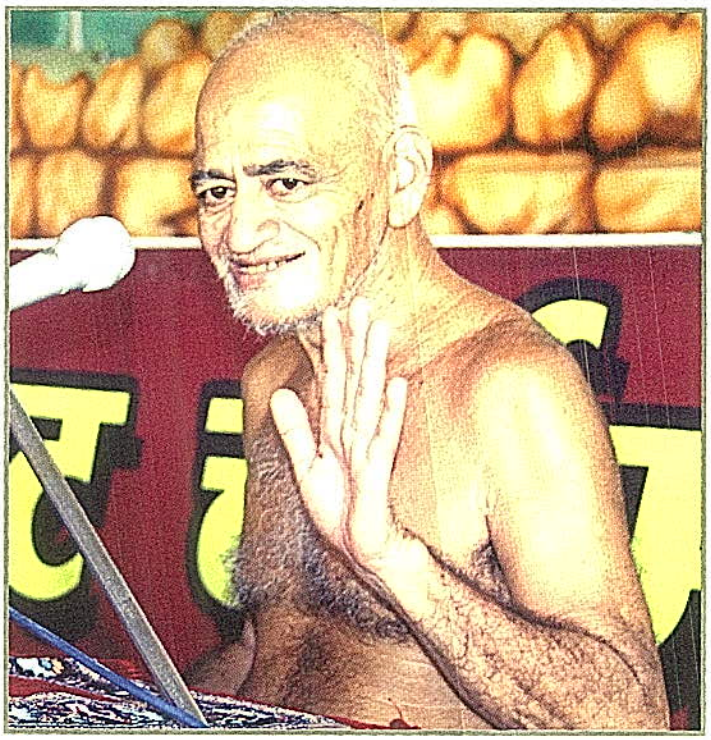

मिथ्यात्व भी नहीं है, सम्यक्त्व भी नहीं है। तीनों ज्ञान मिश्र हैं–मतिज्ञान, मत्यज्ञान, श्रुतज्ञान, श्रुताज्ञान, अवधिज्ञान, विभंगज्ञान। ज्ञान को मिश्रा (अज्ञानुयुक्त) बनाने की प्रकृति सम्यक्प्रकृति है। दधि और गुड़ का मिश्रण ठीक नहीं क्योंकि किसी भी वस्तु का स्वाद नहीं आता।

ज्ञान की समीचीनता के लिए मिथ्यात्व का अभाव आवश्यक है। इतने पर ही नहीं रूकिए अपितु चारित्र को अंगीकार कीजिए।

ज्ञान की समीचीनता ज्ञान के विविध पक्षों का जानने की शक्ति प्राप्त होना है। दूध में छिपे को विज्ञान के माध्यम से जाँचें। हमें सभी तत्त्वों को देखना चाहिए। एक को प्रमुखता और अन्य की उपेक्षा उचित नहीं है। सम्यक्त्वाचरण चारित्र से भिन्न वस्तु है। अष्टपाहुड में देखें–

तृतीय गुणस्थान में अवधिदर्शन रहता है। ऐसा आचार्य श्री ने लिखा है। तृतीय गुणस्थान में अनन्तानुबंधी का अभाव नहीं है उसका उदय हो रहा है।

दर्शन उपशांत है। औपशमिक भाव सम्यग्दर्शन का प्रतीक है। वहाँ हमारे अंदर कोई परिणाम नहीं आ रहा है। इसलिए पारिणामिक भाव लिख दिया। चारित्र के तीन भेद हैं–

1. क्षायोपशमिक
2. औपशमिक
3. क्षायिक

निर्मल धर्म, सम्यकत्व, संयम, तप और ज्ञान जैन धर्म में तीर्थ है (बोधपाहुड़ गा.27)

आचरण और चारित्र में अंतर है। सम्यग्दर्शन के आठ अंग नहीं होने पर सम्यक्त्वाचरण नहीं होगा। दर्शन मोहनीय के अभाव में हम ज्ञान को क्या कहें? अनन्तानुबंधी की विसंयोजना करे तो आगे बढ़ेंगे।

प्रारंभ के चार गुणस्थान हैं– मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र और अविरत सम्यक्त्व। ये चार गुणस्थान दर्शनमोहनीय की विवक्षा में है। इससे आगे बढ़िए। युक्ति और आधार के बिना विवेचन निराधार का ही सूचक है। स्वाध्याय का अर्थ है–राग, द्वेष की हानि। इतने सिद्धान्त ग्रन्थ उपलब्ध हैं; यह हमारा, आपका सौभाग्य है। पार होने का मात्र उद्देश्य रखना चाहिए। ज्ञातुमिच्छा जिज्ञासा है। श्रुत केवली होने पर भी गणधर देव को शंका होती है। कौन सी? केवलज्ञान की।

परिग्रह कौन रखता है?
परिग्रह को आप रखते हो
या परिग्रह आपको रखता है?
परिग्रह भले ही दूर रखा है
किन्तु परिग्रह का अधिकार तो आपका ही है?

परिग्रह गोंद से चिपका नहीं, आपके द्वारा चिपकाया गया है।

परिग्रह को आपके वियोग का दुःख नहीं
किन्तु परिग्रह के बिना आपका दुःख असह्य हो जाता है।

अध्यवसाय के साथ बंध होता है, अपने आप गाँठ नहीं पड़ती। 'तिलतुसमास' जितना भी परिग्रह आपके पास है; वह बुद्धिपूर्वक है कि अबुद्धिपूर्वक? जिस प्रकार आपने ग्रहण किया इसी प्रकार तुम्हीं छोड़ो। अपने आप छोड़ दोगे तो आपका त्याग कहलायेगा, मुक्ति में कारण बनेगा।

रत्नत्रय की स्तुति

मानव जीवन में श्रद्धा की अभिव्यक्ति आवश्यक है। जो मेरा यहाँ है वह वहाँ भी सुरक्षित रहे तो दयामय प्रवृत्ति करो। समाधि की साधना (पूर्ति) चतुर्थ गुणस्थान में कैसे संभव है? अपरिग्रह के प्रति आस्था से समधी बनोगे।

'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' में श्रमणों को नहीं श्रावकों को केन्द्र में रखा गया है। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज–गुरुवर ऐसा कहा करते थे कि यह रत्नत्रय की स्तुति है। साधु उनके लिए सज्जन हैं; तभी तो वे कहते हैं कि–

मोहतिमिरापहरणे, दर्शनलाभादवाप्तसंज्ञानः।
रागद्वेषनिवृत्त्यै, चरणं प्रतिपद्यते साधुः।।

अर्थात् दर्शन मोह रूपी अन्धकार के नाश होने से जिसे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति से सम्यग्ज्ञान हो गया है; ऐसा भव्यजीव राग–द्वेष की निवृत्ति के लिये सम्यक् चारित्र को धारण करता है।

राग–द्वेष की निवृत्ति के लिए हिंसादि पाँच पापों का जो त्याग किया वह श्रेयस्कर है। मार्ग के ऊपर दृष्टि नहीं है तो कठिनाई होगी। यदि मार्ग की कोई आवश्यकता नहीं तो मंजिल की भी कोई आवश्यकता नहीं। मंजिल है तो मार्ग भी चाहिए।

'देवागम स्तोत्र' में आचार्य समन्तभद्र भगवान् से प्रश्न करते हैं। उन्होंने भगवान् के सुख से बुलवाया है (भगवान् बोलते नहीं हैं)।

वृहत्स्वयंभू स्तोत्र में तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ भगवान् का स्तवन करते हुए आचार्य श्री समन्तभद्र देव कहते हैं कि–

स्वदोषशान्त्याविहितात्मशान्तिः,
शान्तेर्विधाता शरणंगतानाम्।
भूयाद्भवक्लेशभयोपशान्त्यै,
शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः।।

अर्थात् अपने रागादि दोषों की शान्ति से जिन्हें आत्मशान्ति की प्राप्ति हुई है, जो शरण में आये हुए जीवों को शान्ति के करने वाले हैं, जो कर्मरूप शत्रुओं को जीतने वाले विशिष्टज्ञान अथवा लोकोत्तर ऐश्वर्य से सहित हैं तथा शरण दन में निपुण हैं वे शान्तिनाथ जिनेन्द्र मेरे संसार परिभ्रमण, क्लेशों और भयों की शान्ति के लिये हों।

तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ ने दोषों की हानि की है, इसलिए उन्हें नमस्कार है।

दृढ़ मान्यता की आवश्यकता–

हमारी मान्यता दृढ़ होना चाहिए, ढुलमुल नहीं। यदि मान्यता दृढ़ है तो सीधे कदम उठेंगे। जो पैर पड़ते हैं उनको कुछ ज्ञान नहीं। कंकड़ लगा और भान हुआ तो समझ लो कि पैरों में मन है। मन का विषय और स्थान नियत नहीं। इस ज्ञान को अपने नियंत्रण में रखो। ज्ञानी का विचार तो ऐसा होता है कि–

आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोगे।।
(समयसार, गाथा 18)

अर्थात् मेरे दर्शन, ज्ञान और चारित्र में तथा प्रत्याख्यान में एवं संवर में और ध्यान के समय में केवल आत्मा ही आत्मा है।

विद्वान् विद्वत्ता के साथ निर्णय लें, काहे को ? विद्वत्तासम्पन्न हैं इसीलिए तो विद्वान् हैं। "मौनं सम्मति लक्षणं" भी और "मौनं सन्मति लक्षणं" भी है। शास्त्रों को पढ़ते समय मूल को पहले पढ़ें। भाव समझें। भावार्थ आवश्यक नहीं है। आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी कहते हैं कि–

णाणं सव्वे भावे पच्चक्खाई परेत्ति णादूण।
तह्मा पच्चक्खाणं णाणं णियमा मुणेदव्वं।।

अर्थात् यह आत्मा जब अपने से भिन्न पदार्थों को पर जान लेता है तब उन्हें उसी समय छोड़ देता है अतः वास्तव में ज्ञान ही प्रत्याख्यान है।

मोक्खपहे अप्पाणं ठवेहि चेदयदि झायहि तं चेव।
तत्थेव विहर णिच्चं मा विहरसु अण्णदव्वेसु।।436।।
पाखंडीलिंगेसु व गिहिलिंगेसु व बहुप्पयारेसु।
कुव्वंति जे ममत्तिं तेहिं ण णादं समयसारं।।437।।

अर्थात् हे भव्य! तू अपने आपको मोक्षमार्ग में स्थापित

मनुष्य ने जो वस्तु छोड़ दी है, उससे पैदा होने वाले दुःख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है (तिरुवल्लूर)

कर, उसी का अनुभव कर और उस आत्मा में ही निरन्तर विहार कर, अन्य द्रव्यों में विहार मत कर। जो लोग नाना प्रकार के पाखंडी लिंगों में और गृहस्थ लिंगों में ही ममत्व किये हुए हैं वे लोग समयसार को नहीं जानते ।

संयत ज्ञान का नाम ज्ञान है। कोरा ज्ञान मिथ्या है। संयम टक्कर नहीं शक्कर है। संयमी ही वंदनीय है–

दंसणमूलो धम्मो उवइट्ठो जिणवरेहिं सिस्साणं।
तं सोऊण सकण्णे दंसणहीणो ण वंदिव्वो।।

अर्थात् जिनेन्द्र भगवान् ने शिष्यों के लिए सम्यग्दर्शन मूलक धर्म का उपदेश दिया है, सो उसे अपने कानों से सुनकर सम्यग्दर्शन से रहित मनुष्य की वंदना नहीं करना चाहिए।

चतुर्थ गुणस्थान तक कोई चारित्र नहीं होता। अष्टपाहुड पढ़ने/ देखने का पुरुषार्थ करो। 'दंसणमूलोधम्मो' कहा हैं। अष्टपाहुड में 'जिणमग्गे' कहा है। खड़े होकर भोजन करना [illegible]ण है। साधु के लिए कहा कि आहार लेना तो अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान का उपयोग नहीं करना।

णिच्चेलपाणिपत्तं उवइट्ठं परम जिणवरिंदेहिं।
एक्को हि मोक्खमग्गो सेसा य अमग्गया सव्वे।।

अर्थात् तीर्थंकर परमदेव ने नग्नमुद्रा के धारी निर्ग्रन्थ मुनि को ही पाणिपात्र में आहार लेने का उपदेश दिया है। यह एक निर्ग्रन्थमुद्रा ही मोक्षमार्ग है, इसके सिवाय राब अमार्ग हैं। मोक्ष के मार्ग नहीं हैं।

दंसणहीणो ण वंदव्वो' अर्थात् दर्शन हीन की वंदना नहीं करना चाहिए। 'दंसण' शब्द का अर्थ जिनलिंग है। पंचम गुणस्थान से पहले जो आचरण है वह धरातल का कार्य पर रहा है। वास्तविक कल्याण तो श्रमणत्व स्वीकार करने पर ही होगा। ध्यान रहे "णग्गो हि मोक्खमग्गो" अर्थात् नग्नता ही मोक्षमार्ग है; कहा है। वस्त्रधारी को मोक्ष नहीं मिल सकता। आचार्य श्री कुन्दकुन्द ने मोक्खपाहुड (गाथा 80) में कहा है कि–

निग्गंथ मोहमुक्का बावीहपरीसहा जियकसाया।
पावारंभविमुक्का ते गहिया मोक्खमग्गम्मि।।

अर्थात् जो परिग्रह से रहित हैं, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के स्नेह से रहित हैं, बाईस परीषहों को सहन करने वाले हैं, कषायों को जीतने वाले हैं तथा पाप और आरंभ से दूर हैं वे मोक्षमार्ग में अंगीकृत हैं।

भरत– बाहुबली क्षायिक सम्यग्दृष्टि हैं, उसी भव से मोक्ष जाना है। अवधिज्ञान साथ लेकर आये थे किन्तु अवधिज्ञान लगाया नहीं। बुद्धि नहीं हुई और लड़ बैठे। मति वहीं पर कार्य करती है जहाँ ईहा हो। मिथ्यादृष्टि के मस्तिष्क में भी सम्यग्दर्शन नहीं आया। सम्यग्दृष्टि के मन में भी वीतरागता रहती है। रत्नकरण्ड श्रावकाचार में आचार्य श्री समन्तभद्र कहते हैं कि–

सद्दृष्टि ज्ञानवृत्तानि धर्मं धर्मेश्वराः विदुः।
यदीयप्रत्यनीकानि भवन्ति भवपद्धतिः।।

अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को धर्म के ईश्वर (साधु भगवंत), धर्म कहते हैं इनके उल्टे मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र संसार के मार्ग होते हैं।

'णग्गो हि मोक्खमग्गो कहा है। लिंगो हि मोक्खमग्गो' कहा है। किन्तु लिंग में अटको मत। यह भी अनिवार्य साधन है, साध्य नहीं है। जब भी भावना की गयी तो कहा कि–

पडिवज्जदु सामण्णं जदि इच्छसि सव्वदुक्खपरिमोक्खं।

अर्थात् यदि सभी दुःखों से मुक्ति चाहते हो तो श्रामण्य स्वीकार करो। अगर भीतर रत्नत्रय है तो बाहर दिगम्बरत्व अवश्य आयेगा। चारित्र चूलिका में कहा है–"मोक्षमार्गस्य अपर नाम्नः श्रामण्यस्य एव।

'सर्वार्थसिद्धि पीठिका' में मोक्षमार्ग का स्वरूप आया है। परहित सम्पादन के कार्य मोक्षमार्गी करता है। आज चतुर्थ गुणस्थान में सब हो रहा है, निर्विकल्प भी हो रहा है, गुणस्थानातीत भी हो रहा है लिंग का अर्थ दर्शन है। वीतरागता आवश्यक है। जहाँ क्षुधा–तृषादि अठारह दोष नहीं होंगे वहाँ मोक्ष हो ही जायेगी। हिंसारहिए धम्मे अट्ठारहदोषवज्जिए देवेः। अर्थात् हिंसा से रहित धर्म और अठारह दोषों से रहित देव (अरहन्त देव) का स्वरूप कहा है। तपस्वी साधु का स्वरूप बताते हुए कहा है कि–

विषयाशावशातीतो, निरारम्भो परिग्रहः।
ज्ञानध्यानतपोरक्तः तपस्वी स प्रचक्षते।।

अर्थात् जो विषय और आशा से रहित है, आरंभ से रहित है और अपरिग्रही है, ज्ञान, ध्यान और तप में अनुरक्त है; उसे तपस्वी कहते हैं। अध्यात्म की साधना के लिए ऐसा तपस्वी साधु होना आवश्यक है। अध्यात्म साधुता के साथ सरल है। अध्यात्म को जटिल वस्तु मत बनाओ। मेरा एक हायकु है–

मूल बोध में
बड़ की जटाओं सी
व्याख्याएं न हों।

परीषहजयी मोक्षमार्गी

मोक्षमार्गी के लिए तत्त्वार्थसूत्र में कहा कि–"स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः।" अर्थात् तीन गुप्ति, पाँच समिति, दस धर्म, बारह अनुप्रेक्षा, बाईस परीषहजय और चारित्र को धर्म कहा है।

बाईस परीषह सहने वाला मोक्षमार्गी है किन्तु बाईस सौ परीषह सहने वाला मोक्षमार्गी नहीं है।

भगवान् महावीर का मार्ग इतना सुन्दर, अद्वितीय है।

आत्मख्याति में आचार्य श्री अमृतचन्द ने आचार्य श्री कुन्दकुन्दस्वामी का नामोल्लेख नहीं किया जबकि श्री जयसेनाचार्य ने किया है। यह चिन्तन का विषय है।

प्रस्तुति–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
महामन्त्री–श्री.अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्,
बुरहानपुर (म.प्र.)

परोपकारी के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है जो औषधियों का सामान देता है और सदा हरा बना रहता है (तिरुवल्लूर)

आचार्यश्री विद्यासागरजी के सान्निध्य में श्रावक को मिली दुर्लभ समाधि

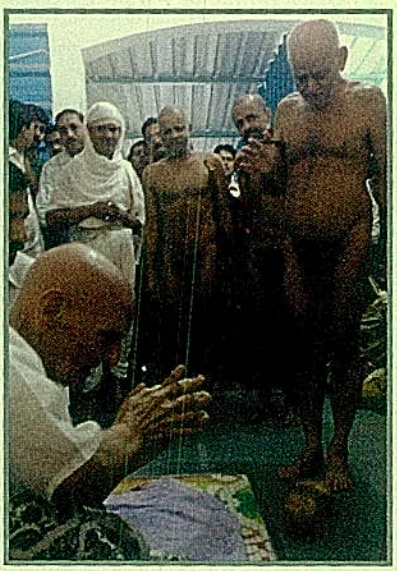

समाधि मोक्ष का द्वार है। जहाँ आत्मा अन्दर-बाहर एकमेव हो जाती है। हर जन्म मरण के लिये होता है। सर्वथा कर्मों का अभाव होने से आत्मा का जीवन-मरण से मुक्त हो जाना संभव है। मोक्ष को मनुष्य-गति से मानव ही प्राप्त कर सकता है। धर्म, अर्थ और काम से आगे मोक्ष के लिये पुरुषार्थ की साधना ही जैन दर्शन का सार है। यही जैन संस्कृति की आत्मा है। देन है। जैनागम के अनुसार समाधिमरण का महत्व यह है कि उत्कृष्ट समाधि-मरण से सात-आठ भव के बाद और जघन्य से दो-तीन भव में नियम से आत्मा को मोक्ष मिल जाता है।

मन में यदि गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा हो, तो किसी भी व्यक्ति का जीवन अंतिम समय में सुधर सकता है। ऐसे ही श्रद्धान का बीजारोपण शातिशयी पुण्योदय से आश्विन कृष्ण सप्तमी, सोमवार 15 सितम्बर, 2014 के दिन हुआ। परिवार के किसी भी सदस्य को कल्पना नहीं थी कि उनका मुखिया भवसागर से पार होने का संकल्प ले चुका है। इन्दौर निवासी विमलचन्द पाटोदी (जन्म : 12 सितम्बर 1926, समाधि : 13 अक्टूबर 2014) ने 15 सितम्बर की सुबह का भोजन लेने के बाद सभी खाद्य पदार्थों का आजीवन त्याग कर दिया। पहले दो दिन तो जल पर रहे।

आचार्य श्री ने सब जानकारी सुन कर कहा, 'जल का त्याग, उपवास सल्लेखना में अपने मन से नहीं किये जाते हैं। समाधि में काफी समय पहले से क्रम से नियमानुसार त्याग किया जाता है।'

अब आचार्य श्री ने दादा जी से पूछा क्या चाहते हो? दादा जी हाथ जोड़कर बोले, 'आपकी चरण-शरण में रहना चाहता हूँ। मेरी समाधि करा दो। व्रती बना दो। शरीर का मोह नहीं है। यह तो नश्वर है। आप जैसा कहेंगे, आज्ञा का पालन करूँगा। अनन्तानन्त भवों की सब से क्षमा चाहता हूँ। सबको क्षमा करता हूँ। यह सुन कर आचार्य श्री ने कहा, 'अच्छा।' फिर कहा, 'बहुत अच्छा।' दादा जी बोले- आपके चरण दर्शन करना है। आचार्य श्री ने पैर आगे बढ़ा दिये। दादा जी ने चरण छू कर हाथ मस्तक पर लगा लिये।

आचार्य श्री ने कहा, 'आपको जैसा बतायेंगे, वैसा करना है।' दादा जी ने हाथ जोड़ कर कहा, 'जैसा आप कहेंगे, वैसा करूँगा। दादा जी की सजगता और समाधि के प्रति दृढ़ वैराग्य भावना के उदय से आचार्यश्री प्रसन्न दिख रहे थे। इसी दिन कायोत्सर्ग कराने के बाद दादाजी का परिवेश ब्रह्मचारी का कर दिया गया। अब दादा जी दस प्रतिमाधारी ब्रह्मचारी हो गये थे। किसी भी गृहस्थ को इतने कम समय में वह भी आचार्यश्री जी जैसे आगम के दृढ़-पालक के सुसानिध्य में दस प्रतिमाएं मिल जाना बहुत बड़ी बात है। इसके लिए साधना देखी जाती है। चर्या को आगम की कसौटी पर परखा जाता है। दादा जी संयम के पथ पर जिस दृढ़ता से आगे बढ़े, वह उनका पिछले दिनों में मन-वचन-काय से की गयी साधना और त्याग का फल था। दृढ़ इच्छा शक्ति से उत्कृष्ट साधक बन गये।

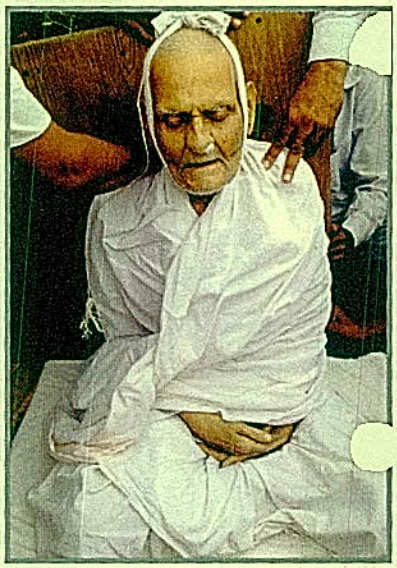

13 अक्टूबर के दिन ब्र. जी ने आचार्य श्री जी से कहा, 'मुझे लग रहा है। मेरा अंतिम समय है।' एक मुनिराज जी का सान्निध्य हमेशा मिलता रहे। आचार्यश्री जी- अच्छा, अच्छा एक मुनिराज जी। साधक ने पुनः कहा- जल भी बंद करा दो। पूर्ण त्याग करा दो। आचार्यश्री जी बहुत खुश हुए। आशीर्वाद दिया। फिर क्या था? दिन भर एक के बाद एक मुनिगण ब्र. जी के कमरे में आते रहे। इस दिन रात्रि में पहले मुनि श्री निस्संगसागर जी का आगमन हुआ। पहले दोनों महाराज जी के पैर पर हाथ रखा था। अंत में निरामयसागर जी 'अरिहंत-अरिहंत' सुना रहे थे। इसी के साथ मुनिराज जी के चरण पकड़े हुए मुखारबिन्द से 'अरिहंत' शब्द निकला। इस जीवन में दस प्रतिमाधारी ब्रह्मचारी अवस्था में रहते हुए उनकी अंतिम श्वांस पूरी हो गयी। यह समय रात के लगभग दस बज कर बीस मिनट का था।

मंगलवार 14 अक्टूबर, 2014 कार्तिक कृष्ण-6, के दिन प्रातःकाल ब्र. जी की देह को पहले संत निवास के सामने बने पाण्डाल में दर्शनार्थ रखा गया। 9 बजे के लगभग विदिशा के पास सांची स्तूप के सामने स्थित पहाड़ी जो उदयगिरि के नाम से शीतलनाथ भगवान का प्राचीन कल्याणक स्थल है, उसकी तलहटी में पूर्व में दो समाधियाँ हैं। इन दोनों समाधियों के बीच में अंतिम संस्कार के लिये चुना गया। समाज के पंडित जी ने धार्मिक विधि से क्रियाएं कराई। ब्र. प्रिंकेश भैया जी ने शांति पाठ बोला। उपस्थित अन्य भैयाजियों ने भी भक्ति बोली।

यहाँ परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे। विदिशा समाज के अध्यक्ष श्री अशोक जी सिंघई तथा महामंत्री श्री प्रद्युमन जी, प्रमुख पदाधिकारी श्री राजीव जैन, वरिष्ठ पत्रकार श्री अविनाश जैन आदि महानुभाव मौजूद थे। क्रिया की पूरी सुव्यवस्था समाज की ओर से की गयी थी। समाधिस्थ का अंतिम संस्कार मृत्यु महोत्सव के रूप में मनाया गया। सभी के मन में आनन्द था, उत्साह था। मुख्य रूप से दोनों ब्र. दीदियां शांता दीदी, स्वर्णा दीदी भी यहाँ पर उपस्थित हुई थी।

समाधि-साधक समाधिस्थ हो गये थे। उनका समाधि-मरण 29वें दिन हुआ।

आचार्य समन्तभद्र स्वामी जी की 'श्रावकाचार' की गाथा 'सल्लेखना-अधिकार', भगवती आराधना, 'मरण-कण्डिका', तथा 'मृत्यु-महोत्सव' के अनुसार समाधि-मरण तीन प्रकार से होता है। तदनुसार आत्म साधक की सल्लेखना 'भक्त प्रत्याखान' है।

- निर्मल कुमार पाटोदी, इन्दौर

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

मुनिद्वय ने साकीनाका (अंधेरी पूर्व) मुंबई में रचा इतिहास

प.पू.प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनंदीजी महाराज के प्रिय शिष्य

मुनिश्री 108 अमोघकीर्तिजी मुनिराज का 34वाँ जन्म जयन्ती, पीछी परिवर्तन व चातुर्मास कलश निष्ठापन समारोह धूमधाम से मनाया गया

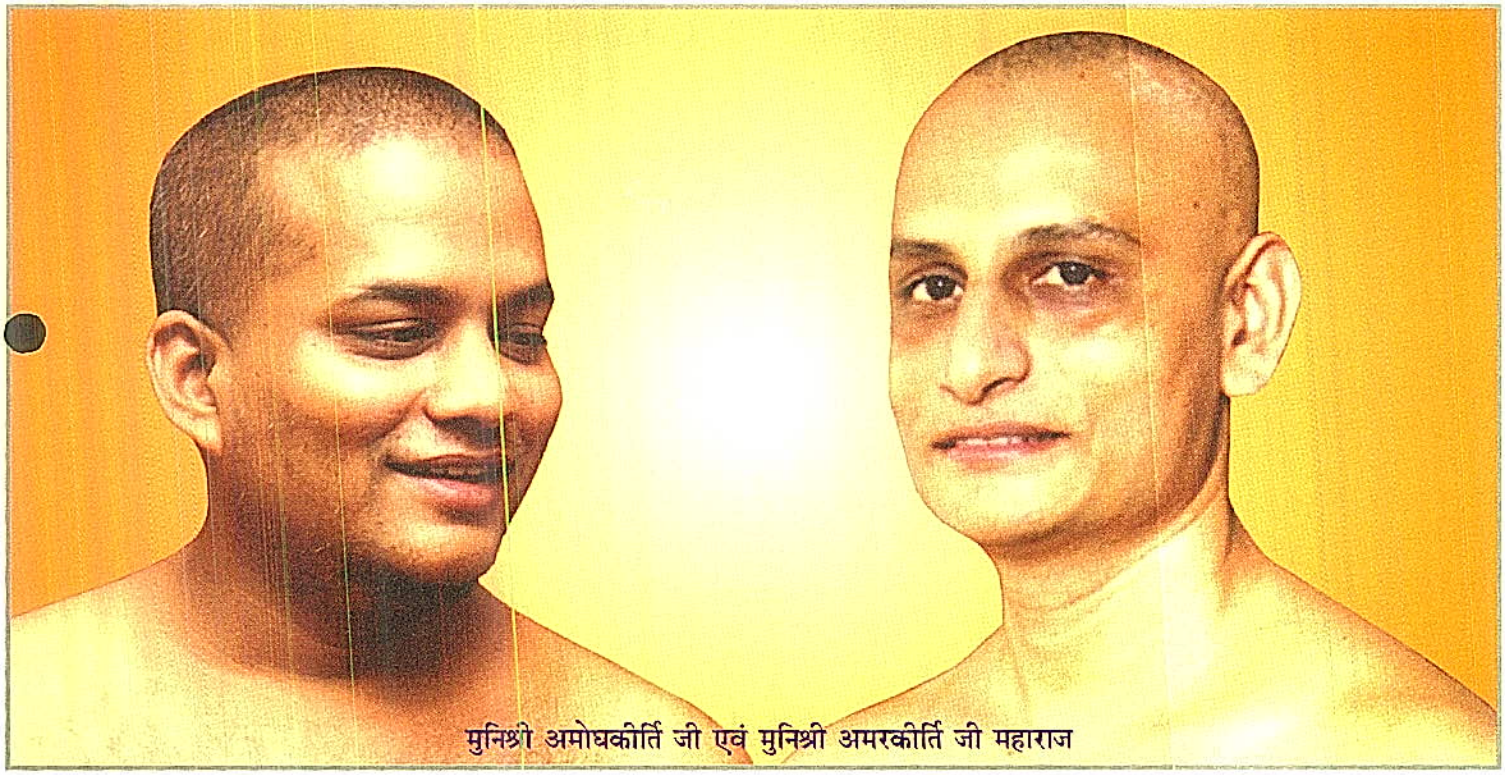

मुनिश्री अमोघकीर्ति जी एवं मुनिश्री अमरकीर्ति जी महाराज

उक्त आयोजन साकीनाका, अंधेरी (पूर्व) मुंबई के विशाल सभा मंडप में मुनिश्री अमरकीर्ति जी एवं मुनिश्री अमोघकीर्ति जी महाराज के सानिध्य में दोपहर १.३० बजे से प्रारम्भ हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से प्रारम्भ हुआ। दीप प्रज्ज्वलित करने की विधि मुनिश्री के माता-पिता श्री अरविन्द कुमार जैन एवं माता श्रीमती कनकमाला जैन के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

साकीनाका चातुर्मास समिति की ओर से मुनिद्वय के श्रीचरणों में श्रीफल भेंट करते हुए समिति के पदाधिकारियों ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए यह निवेदन किया कि गुरुदेव अपना आगामी चातुर्मास भी साकीनाका की इस पावन भूमि पर ही करें, जिससे धर्म संस्कृति के संस्कारों के जो बीज आपने बोये हैं वह पल्लवित एवं पुष्पित होकर पूरी समाज के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकें।

संस्कार नगरी गणाधिपत गणधराचार्य श्री कुंथुगिरि क्षेत्र स्थित गुरुकुल से पधारे हुए करीब ४० बच्चों का चातुर्मास समिति की ओर से उनका स्वागत अभिनंदन किया गया। पश्चात गुरुकुल के विद्यार्थी सर्वश्री अमन जैन, रितिक जैन, विकास जैन, ईशान जैन द्वारा श्रमण संस्कृति की गरिमामयी परम्परा के उन्नायक मुनिद्वय के प्रति अपनी-अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए उनके जनहिताय व जनसुखाय व्यक्तित्व आत्म कल्याण के साथ-साथ विश्व कल्याण हेतु समर्पित जीवन पर बड़े ही मार्मिक एवं विद्वतापूर्ण विचार रखते हुए कहा कि गुरुदेव का जीवन निःसंदेह उनके सुवासित व्यक्तित्व से आज समाज महक रहा है, हम इन साधक के श्रीचरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए यह मंगल कामना करते हैं कि वे चिरकाल तक चिराग बनकर संसार में प्राणीमात्र के अंधेरे पथ को आलोकित करते रहे।

श्री भरतभाई वागड़िया ने मुनिद्वय के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आज से ३४ वर्ष पूर्व १७ दिसम्बर, १९८० को श्रीमती कनकमाला जैन की कोख से धुलिया (महाराष्ट्र) में आपका जन्म हुआ। उसके बाद जीवन में जो परिवर्तन आया वह अनुकरणीय है। बालक नयन जैनअपने पिता श्री अरविन्द कुमार जैन के कुल आंगन का मणि प्रदीप बन सबके नयन के तारे बन गये। बचपन से ही धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत नयनकी बहुमुखी प्रतिभा देखकर सभी हत-प्रभ रह जाते थे। माता-पिता के साथ देव दर्शन, व्रत-उपवास, तीर्थयात्रा करते-करते कब तीर्थ बनने का संकल्प उनके मन में आया यह किसी को पता नहीं। १६वर्ष की आयु में नयन ने सांसारिकता से विमुक्त होकर महाव्रत अंगीकार कर लिया और २४ फरवरी १९९९ को शाहगढ़ (म.प्र.) में प्रज्ञा श्रमण आचार्यश्री १०८ देवनंदीजी महाराज से मुनिदीक्षा ग्रहण कर मुनि अमोघकीर्ति जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उसके बाद सन् १९९९ से २००९ तक मुनिद्वय गुरुवर देवनंदीजी महाराज के सानिध्य में रहे। सन् २०१० में प्रथम बार गुरु आज्ञा से पृथक होकर आपका विहार मुंबई की ओर हुआ और बोरीवली (पश्चिम) मुंबई में आपका चातुर्मास सम्पन्न हुआ। उसके बाद गुलालवाड़ी मंदिर, खार मंदिर, गोरेगांव मंदिर और २०१४ में आपका चातुर्मास इस धर्म नगरी साकीनाका-अंधेरी(पूर्व) मुंबई में सम्पन्न हुआ है। मुनिद्वय का सानिध्य पाकर हम साकीनाका निवासी कृत-कृत हैं। उनका वात्सल्य भाव हम सब पर सदैव इसी प्रकार बना रहे, ऐसी हमारी मनोकामना है।

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25) । अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

सुदी बाकलीवाल ने भक्ताम्बर मंत्रोच्चार के साथ बड़े ही भावपूर्ण नृत्य प्रस्तुत किये । मंच संचालक वाणी भूषण श्री प्रदीप छाबड़ा ने बड़े मार्मिक शब्दों में कहा कि भगवान आदिनाथ से लेकर तीर्थंकर महावीर तक सभी पैदल चल कर धर्म प्रभावना करते रहे। हमारे द्वय मुनिराज भी पैदल ही चलकर धर्म प्रभावना कर रहे हैं।

श्री जितेन्द्र किकावत ने मुनिद्वय के प्रति उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे स्व.पूज्य पिता श्री वसंतलालजी किकावत की यह उत्कट इच्छा थी कि मुनिद्वय जिनका चातुर्मास बोरीवली, खार, गुलालवाड़ी एवं गोरेगांव मंदिरों में सम्पन्न हुआ उसी प्रकार साकीनाका में भी एक बार उनका चातुर्मास सम्पन्न होना चाहिए, परन्तु स्थानाभाव और बिखरी हुई समाज को संगठित कौन करेगा यह विचार कर वे कभी-कभी चिंतित भी हो जाया करते थे। परन्तु उनकी इस भावना की पूर्ति हमारे ये द्वय मुनिराजों ने पूर्ण किये। २९ जून, २०१४ को जब युगल मुनिराज के चरण साकीनाका की धरती पर पड़े और चातुर्मास की जब बात उठी तो मन में एक अजीब सी तरंगे उठने लगी। श्रीमती रूबी कीर्ति कुमार डावड़ा एवं यहां का पूरा समाज तैयार हो गया। फलस्वरूप महाराज का चातुर्मास यहाँ सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मुनिद्वय के पाद प्रक्षाल की बोली श्रीमती अनुराधा झमकलालजी जैन, जिनवाणी भेंट श्रीमती चन्द्रकला जिगनेश शाह एवं पीछी भेंट सौ. रूबी कीर्ति कुमारजी डावड़ा ने ली। मुनिश्री अमरकीर्ति जी को पीछी भेंट करने का सौभाग्य श्रीमती रेखा जैन, गोरेगांव को मिला। इस अवसर पर मुनि श्री के जीवन पर एक नाटिका का मंचन भी किया गया जो अपने आप में अनूठा था। पश्चात बालिकाओं ने सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किये।

मुनिश्री अमरकीर्ति जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। यह जन्म जयंती मनानी तभी सार्थक है जब संयम के द्वारा जन्म की श्रृंखला को समाप्त किया जाय। हर व्यक्ति की सोच सकारात्मक होनी चाहिए तभी वह संयम के पथ पर अग्रसर हो सकता है। संयम शरीर को शुद्ध सोना बनाता है। मुनिश्री ने सभी को संयम पर चलने की सीख दी। मुनिश्री अमोघ कीर्ति जी ने अपने आशीर्वचन में साकीनाका वासियों की खासियत पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यहां की सम्पूर्ण जैन समाज ने संगठन का जो परिचय दिया है उसी का यह परिणाम है कि आज की सभा में इतना बड़ा हाल भी छोटा पड़ रहा है। मुनिश्री ने कहा कि यहां समाज के जितने भी घर हैं सभी के घरों में वे स्वयं गये हैं उनके चरण अवश्य पड़े हैं भले ही आहार हुआ हो या न हुआ हो मैंने उनके भावों को टटोला है सभी को मेरा आशीर्वाद है। साकीनाका वासियों ने मुनिभक्ति का जो अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है वह अनुकरणीय है। उन्होंने कुंथुगिरि से आये सभी बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि इन बच्चों ने अपने जीवन को संयम की ओर मोड़ते हुए सुसंस्कारों को अपना कर नये उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हमारा आशीर्वाद इनके साथ है। यही बच्चे कल के आदर्श होंगे। मुनिश्री ने सौ. रूबी कीर्तिकुमार डावड़ा के आदर्शों का बखान करते हुए कहा कि ऐसी अनुशासित एवं कर्मठ महिला समाज में बहुत ही कम पायी जाती हैं। तन, मन, धन समर्पित कर चातुर्मास के कार्यक्रम को सफल बनाने में उन्होंने जो कार्य किये हैं वह सराहनीय है। श्री जितेन्द्र किकावत के पुरुषार्थ की प्रशंसा करते हुए मुनिश्री ने कहा कि १+१ मिलाकर दो नहीं ११ होकर अपनी ताकत का जो परिचय दे दिया है वह आज देखने को मिल रहा है। इसी तरह उन्होंने एकता का संदेश देते हुए कहा कि संगठन में बहुत ताकत होती है इसे सदैव बनाये रखना चाहिए।

मुनिश्री ने कहा हमें किसी भी पिच्छीधारी साधु का अनादर नहीं करना चाहिए, उनका सदैव सम्मान करना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि छोटी चीजों का मूल्यांकन बड़ी चीजों से नहीं करना चाहिए जो कार्य सुई कर सकती है वह तलवार नहीं कर सकती। छोटे-छोटे कार्य करने से बड़े कार्य अपने आप होने लगते हैं। बूंद-बूंद से समुद्र और समुद्र से सागर बनता है। इसी प्रकार हमें संयम के मार्ग पर धीरे-धीरे अग्रसर होना चाहिए। सभी के साथ रहना चाहिए जिस तरह साधु बिना समाज के नहीं रह सकता उसी प्रकार समाज बिना साधु के अधूरी है। सभी के साथ मिल-जुलकर रहने से हमारी शक्तियाँ सुदृढ़ होती है। फिर चाहे वह जितना भी बड़ा कार्य क्यों न हो सभी आसान लगने लगते हैं। मुनिश्री ने सभी को संगठित रहने का मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर श्रीमती रूबी कीर्तिकुमार डावड़ा को 'दान शिरोमणि' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

मुनिश्री के पाद-प्रक्षाल, शास्त्र भेंट, पिच्छी परिवर्तन के साथ चातुर्मास में स्थापित कलशों का प्रतिष्ठान एवं अंत में संगीतमय आरती के साथ सभा विसर्जित हुई। गुरुदेव के जयकारा की घोष से पूरा वातावरण धर्ममय बन गया। सभा में बोरीवली, गोरेगांव, गुलालवाड़ी- मुंबई एवं भांडुप आदि स्थानों से पधारे हुए महानुभावों ने मुनिद्वय के श्रीचरणों में श्रीफल भेंट करते हुए अगला चातुर्मास उनके यहाँ करने का निवेदन किया।

सागर से 40 किमी. दूर भ. पार्श्वनाथ की प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त

विगत एक महीने से एक जैन महिला को सपने में पार्श्वनाथ भगवान आ रहे थे और कह रहे थे कि मुझे बाहर निकालो। बाद में अंतिम वार्निंग दी कि कल नहीं निकाला तो अनिष्ट हो जायेगा, तब उसने परिवार वालों को बतलाया फिर उनके परिवार वाले सागर से 40 किलोमीटर आगे धमोनी के फोर्ट के पास गये। आगे घना जंगल था। जंगल में जाने से सभी लोग डर गये। महिला और यादव ड्राइवर के आगे एक गुफा में करीब 300 फीट अंदर जाने के बाद अंधेरे के कारण कुछ नहीं दिख रहा था तभी देव वाणी हुई क्या चाहिये। औरत ने देवों को दीपक जलाने को कहा। दीपक जलते ही जिन प्रतिमा सामने नजर आयी। पूजा करने के बाद जिन प्रतिमा को यादव ड्राइवर ने बैग में रख कर बाहर लाया। यह प्रतिमा सागर से 12 किलोमीटर दूर बहेरिया ग्राम के जैन मंदिर में विराजमान है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री खुशाल जैन 'सी.ए.' ने उस स्थान का विजिट किया और स्थानीय लोगों से चर्चा कर हर्ष व्यक्त किया।

- अजित नायक, सागर

जैन धर्म में तपतीर्थ, ज्ञानतीर्थ, संयमतीर्थ आदि कहे गये हैं

श्री 1008 समवशरण महामण्डल विधान के पावन अवसर पर आर्यिका ससंघ का हुआ पिच्छिका परिवर्तन समारोह

(संयम का उपकरण है पिच्छिका - गुणमति माताजी)

मड़ावरा, ललितपुर । वर्णी नगर मड़ावरा में संत शिरोमणि आचार्यश्री १०८ विद्यासागरजी महाराज की आज्ञानुवर्ती शिष्या आर्यिकारत्न १०५ गुणमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में श्री १००८ समवशरण अर्हतचक्र महामण्डल विधानका आयोजन नगर की हृदय स्थली महावीर विद्या-विहार प्रांगण में आयोजित हो रहा है। इस अवसर पर आर्यिका ससंघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह आयोजित हुआ। पिच्छिका की भव्य शोभायात्रा श्री १००८ चन्द्रप्रभु जिनालय से निकाली गई। भव्य शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुये महावीर विद्या-विहार प्रांगण में पहुंची, जिसमें जैन युवा जागृति सेवा संघ के म्यूजिकल ग्रुप की स्वर लहरियों के साथ युवा एवं इन्द्र इन्द्राणी एवं श्रद्धालुगण भक्तिभाव पूर्वक नृत्य करते हुए चल रहे थे। जिसमें वग्गियों में बैठकरआयोजन के चक्रवर्ती रवि जैन, राकेश मलैया, टीटू जैन, राकेश जैन पिच्छिका लेकर चल रहे थे। पिच्छिका परिवर्तन समारोह का दृश्य हजारों श्रद्धालुओं ने देखा। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मंगलाचरण देश के ख्याति प्राप्त कवि चन्द्रसेन जैन ने किया। आचार्य विद्यासागर संस्कार वर्णी पाठशाला के नन्हें-मुन्ने बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। तत्पश्चात आर्यिका ससंघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर आर्यिका रत्न गुणमति माताजी ने कहा कि संयम का उपकरण पिच्छी होता है। संयम धारण करने वाला ही पिच्छी को धारण करता है। धर्म ही हमें मोक्ष मार्ग पर ले जाता है। आर्यिका ससंघ की पुरानी पिच्छी लेने का सौभाग्य रीतेश जैन,डॉ. वी.सी.जैन, सुमत मोदी, राकेश जैन खुटगुवा को प्राप्त हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि

पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' रहे। रात्रि में जैन युवा जागृति म्युजिकल ग्रुप द्वारा अखिल भारतीय कवि सम्मेलन श्री चन्द्रसेन जैन, भोपाल के निर्देशन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर जैन युवा जागृति सेवा संघ वर्णी व्यायामशाला, आदिनाथ सेवा संघ, सर्वोदय, बालिका मण्डल, दिगम्बर जैन स्वस्ति महिला महासमिति इकाई। दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, शाकाहार विचार मंच आदि स्वयंसेवी संस्थाओं का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन ब्र. अभय भैया, इंदौर ने किया। इस अवसर पर डॉ. वी.सी.जैन, डॉ.राकेश सिंघई, डॉ.विकास जैन, राजेन्द्र जैन, सुरेन्द्र जैन, देवेन्द्र सर्राफ, बंटी बजाज, नीलेश जैन, अभिनंदन चौधरी, धर्मेन्द्र सर्राफ, सुनील सिंघई, शिक्षक पुष्पेन्द्र जैन, प्रदीप सिंघई, चक्रेश जैन, राजीव सहित सैकड़ों श्रद्धालुगण मौजूद रहे।

- शिक्षक पुष्पेन्द्र जैन, मड़ावरा, ललितपुर

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी जैन अ.भा. पत्र सम्पादक संघ के महामन्त्री मनोनीत

सूरत, यहाँ परम पूज्य आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में आयोजित अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के दि. 22 एवं 23 नवम्बर,2014 को आयोजित अधिवेशन में पार्श्वज्योति एवं जैन तीर्थवंदना के सम्पादक कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन, बुरहानपुर को नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मालव, ग्वालियर ने महामन्त्री मनोनीत किया। कार्यकारिणी इस प्रकार है--अध्यक्ष– श्री रवीन्द्र मालव, कार्याध्यक्ष – श्री अखिल बंसल,जयपुर, उपाध्यक्ष--डॉ. संजीव भानावत, महामन्त्री– डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती', संयुक्त महामन्त्री– डॉ. महेन्द्र मनुज, इन्दौर, संगठन मन्त्री– पं. वर्धमान सोंरया, टीकमगढ़, प्रचारमन्त्री– डॉ. राजीव प्रचंडिया, अलीगढ़, कोषाध्यक्ष–श्री जगदीशप्रसाद जैन, आगरा। कार्यकारिणी सदस्यों में डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर, श्री विजय जैन, मुम्बई, डॉ. पी.सी.रांवका, जयपुर, श्री शैलेष कापड़िया, सूरत, श्री शांतिनाथ होतपेटे, हुबली, श्री दिनेश दगड़ा, कोलकाता, श्री नवनीत जैन, मेरठ, श्री नरेन्द्र जैन, अजमेर, श्री अकलेश जैन, अजमेर, डॉ. नीलम जैन, पुणे, डॉ. ज्योति जैन, खतौली, पं. अशोक शास्त्री, इन्दौर, डॉ. सुशीला सालगिया, इन्दौर एवं आमंत्रित सदस्यों में डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, सनावद, डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली, ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर, श्रीमती शैल बंसल, जयपुर आदि मनोनीत किये गये हैं।

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के महामन्त्री डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' को बनाये जाने पर भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्रीमान् सिंघई सुधीर जैन ने हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए भारती जी सहित सभी पदाधिकारियों को बधाई प्रेषित की है तथा समस्त पत्र सम्पादक संघ से तीर्थक्षेत्र कमेटी को विशेष सहयोग देने की अपील की है।

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

अशोक विहार में 29 वर्षों में पहली बार सम्पन्न हुई वाचना

अहिच्छत्र में मनाया गया श्री पार्श्वनाथ जन्म-तप कल्याणक

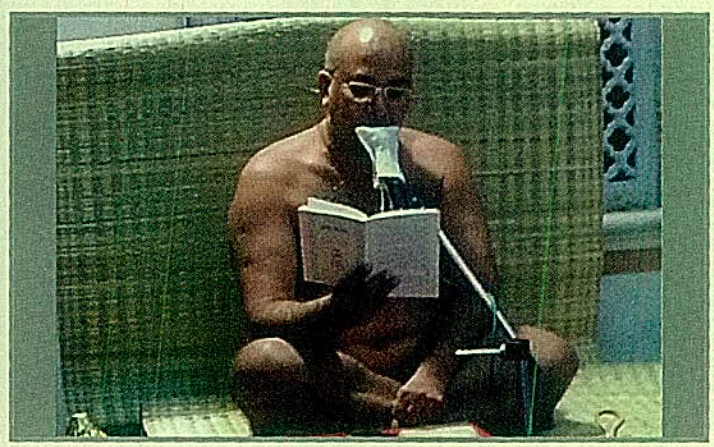

त्रिलोक तीर्थ प्रणेता पंचम पट्टाचार्य परम पूज्य गुरुवर आचार्यश्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागरजी महाराज के शिष्य परम पूज्य एलाचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के शीतकालीन प्रवास से राजधानी दिल्ली के अशोक विहार फेज-1 में व्यापक धर्मप्रभावना सम्पन्न हो रही है। एलाचार्यश्री ने प्रतिदिन सायंकाल में आचार्य कुन्द कुन्द स्वामी विरचित श्री रयणसार ग्रंथराज की वाचना से अनगार और सागर की चर्या के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उल्लेखनीय है कि श्री दिगम्बर जैन मंदिर, अशोक विहार फेज-1 के लगभग 29 वर्षों के इतिहास में ऐसा प्रथम बार हुआ जब किसी संत के मुखारबिद से किसी ग्रन्थ की वाचना निर्विघ्न सम्पन्न हुई हो। इस पुनीत प्रसंग पर रविवार 21 दिसम्बर, 2014 को एलाचार्यश्री के सान्निध्य में श्री भक्तामर विधान का भव्य आयोजन दोपहर 2.00 बजे से श्री मंदिर जी में किया गया। जिनभिषेक, शांति धारा आदि मांगलिक क्रियाओं के साथ विधान का विधिवत शुभारम्भ हुआ। विधानाचार्य श्री संदीप जैन शास्त्री तथा स्वर संगीत श्रीमती बबिता जैन झांझरी द्वारा था। श्रीजी की भक्ति में निमग्न धर्मानुरागी बंधुगण इतने भावविभोर हो उठे कि सभी ने स्वयं से एलाचार्य श्री के निर्देशन में श्री भक्तामर जी के काव्यों का शुद्ध उच्चारण बिना विधानाचार्य तथा संगीत के किया।

भक्तों से ठसाठस भरे हॉल में धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य एलाचार्य श्री ने सम्यक्दर्शन की महिमा का वर्णन किया। एलाचार्यश्री ने बताया कि मोक्ष मार्ग पर बढ़ने के लिए सबसे पहले सम्यक्दर्शन प्राप्त करना होगा। इसके बिना सारी क्रियाएं निरर्थक हैं। आचार्यश्री मानतुंग जी की श्रद्धा भक्ति अनुकरणीय है जिसके कारण जिनशासन की गरिमा का गौरव बढ़ा। भौतिक संसाधनों की पूति हेतु भक्तामर जी का प्रयोग करना सर्वदा गलत है। ज्ञात ही है कि अशोक विहार में एलाचार्य श्री के सान्निध्य में जान-धारा का अविरल प्रवाह निरंतर चल रहा है। भीषण सर्दी और कोहरे की स्थिति में भी प्रातः 5.45 बजे से एलाचार्य श्री के मुखारबिंद ज्ञान-धारा का अविरल प्रवाह निरंतर चल रहा है। भीषण सर्दी और कोहरे की स्थिति में भी प्रातः 5.45 बजे से एलाचार्य श्री के मुखारबिंद से श्री पुरुषार्थ देशना पर मार्मिक विवेचन श्रवण करने के लिए भारी संख्या में ज्ञान-पिपासुजन सम्मिलित हो रहे हैं। तत्पश्चात प्रातः 8.00 बजे से श्री भक्तामर स्तोत्र की कक्षा का आयोजन चल रहा है जिसमें एलाचार्य श्री द्वारा संस्कृत व्याकरण संबंधी अनेक गूढ़ विषयों पर प्रकाश डाला गया। वर्णमाला, दीर्घ-ह्रस्व स्वराघात, संधि, संयुक्ताक्षर आदि अनेक बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए श्री भक्तामर जी के शुद्ध उच्चारण तथा भावार्थ का हृदयस्पर्शी विवेचन अशोक विहार के साथ-साथ दिल्ली की विभिन्न कालोनियों से सम्मिलित हो रहे भक्तों की क्षुधा को शांत कर रहे हैं।

अशोक विहार जैन समाज या संभवतः समस्त दिल्ली जैन समाज के लिए यह प्रथम अवसर ही है जब श्री भक्तामर जी का इतना गहन और शुद्ध पाठन सम्पन्न होगा। श्री भक्तामर जी की कक्षा निर्विघ्न संपन्न होने के उपलक्ष्य में तथा भगवान आदिनाथ मोक्ष कल्याणक दिवस के प्रसंग पर रविवार, दिनांक 18 जनवरी, 2015 को 12 घंटे का अखण्ड भक्तामर पाठ आयोजित किया जा रहा है तथा सोमवार, दिनांक 19 जनवरी, 2015 को श्री भक्तामर विधान का विराट आयोजन किया जायेगा। विधान के पश्चात भगवान आदिनाथ स्वामी के श्री-चरणों में निर्वाण लाडू चढ़ाया जायेगा। श्री रयणसार जी की वाचना संपन्न होने के पश्चात सायंकाल में एलाचार्यश्री द्वारा स्वरूप संबोधन पर मार्मिक स्वाध्याय करवाया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि नव वर्ष की बेला पर दिनांक 1 जनवरी, 2015 एलाचार्य श्री का सामूहिक चौका मंदिर जी में लगेगा, जहाँ तीनों स्वाध्याय एवं शिक्षण कक्षा में सम्मिलित हो रहे ज्ञान-पिपासुओं को आहार-दान का सौभाग्य प्राप्त होगा।

ज्ञातव्य है कि जैन धर्म के तेइसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवानका जन्म एवं तप कल्याणक दिनांक 18 दिसम्बर, 2014 को मनाया गया। इस पुनीत प्रसंग पर एलाचार्यश्री की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से भव्य कार्यक्रम का आयोजन श्री दिगम्बर जैन ज्ञान तीर्थ मंदिर, अहिच्छत्र, किला रामनगर, जिला बरेली (उ.प्र.) में किया गया। प्रातःकाल में जिनभिषेक, शांतिधारा के साथ सामूहिक नित्य नियम पूजन सम्पन्न हुई। तत्पश्चात श्रीजी की भव्य रथयात्रा समस्त नगर में निकाली गयी। एलाचार्यश्री के आशीर्वाद से राजधानी दिल्ली से सैकड़ों भक्तजन बसों तथा निजी वाहनों से समारोह में सम्मिलित होने के लिए यहाँ पहुंचे। ज्ञात हो कि यहाँ श्री मंदिरजी का जीर्णोद्धार एवं भव्य सौंदर्यीकरण कार्य प्रगति की ओर अग्रसर है।

- समीर जैन, दिल्ली

भगवान पार्श्वनाथजी का वार्षिक रथ यात्रा महोत्सव

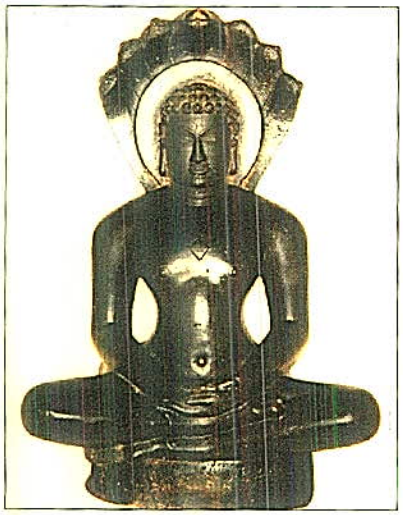

कमठाण। प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी जैनों के तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ जी का वार्षिक रथ यात्रा महोत्सव परम पूज्य १०८ आचार्य श्री श्रुतसागर मुनि महाराज जी तथा प.पू. १०८ कल्याण सागर जी मुनि महाराज जी की पावन प्रेरणा तथा आशीर्वाद से बीदर जिले के कमठाण ग्राम में अतीव पुरातन जैन तीर्थक्षेत्र श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र में दिनांक २४ जनवरी, २०१५ शनिवार से २६ जनवरी, २०१५ सोमवार तक बड़े ही हर्षोल्लास के वातावरण में पारंपरिक रीति से मनाने का निश्चय किया गया है। इस दौरान ध्वजारोहण, बोलियाँ, पंचामृत महाभिषेक, क्षेत्र शुद्धि होम, रत्नत्रय आराधना, उपनयन संस्कार, साधकों को सम्मान, विविध स्पर्धा, धार्मिक गोष्ठी, प्रवचन, पालकी का शोभा यात्रा, गीत गायन आदि कार्यक्रम होंगे।

आंध्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक के अनेक गणमान्य व्यक्ति इस महोत्सव में भाग ले रहे हैं। जैन स्वाध्याय महिला मंडल की ओर से अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा जैन धर्म पर वीडियो प्रदर्शन का भी आयोजन किया गया है। तीनों दिन यात्रियों के रहने के लिए आवास तथा भोजन की व्यवस्था की गई है।

अतः धर्मानुरागी महानुभाव इस महान उत्सव में भाग लेकर पुण्य प्राप्ति के सहभागी बनें।

- जिनेन्द्र एन. टिक्के

अध्यक्ष-श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, कमठाण

भूगर्भ से स्फटिक मूर्तियां प्राप्त

बंडा-बेलई (मध्य प्रदेश) से 11 किलोमीटर दूर नैनधरा के एक छोटे से गांव में एक ब्रह्मचारी जी को सपना आया। सपने में देव लोगों ने स्थान बताया और उस स्थान की खुदाई करने के बाद 5 स्फटिक मूर्तियां प्राप्त हुई। मूर्तियां अति सुन्दर एवं चमत्कारी हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री खुशाल जैन 'सी.ए.' ने उस स्थान का विजिट किया और स्थानीय लोगों से चर्चा कर हर्ष व्यक्त किया।

श्री जटवाड़ा क्षेत्र वार्षिक यात्रा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

श्री 1008 संकटहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जटवाड़ा पर गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी इसका आयोजन मुनि श्री 108 गिरनार सागर जी महाराज ससंघ एवं आर्यिका श्री कुलभूषणमति माताजी, आर्यिका क्षमाश्री माताजी एवं आर्यिका स्वर्णमती माताजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। यात्रा का संचालन महामंत्री श्री देवेन्द्रकुमार काला ने किया।

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये।

श्रीक्षेत्र श्रणबेलगोला में चिक्कबेट्ट –चन्द्रगिरि महोत्सव के अन्तर्गत चन्द्रगिरि शिलालेख तथा प्राकृत साहित्य परम्परा : राष्ट्रीय विद्वद्संगोष्ठी आचार्य एवं श्रुत पूजा सम्पन्न

श्रीक्षेत्र श्रणबेलगोला में स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में आयोजित चिक्कबेट्ट –चन्द्रगिरि महोत्सव के अन्तर्गत राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान के निदेशक डॉ. रमेशचन्द जैन के संयोजकत्व में चन्द्रगिरि शिलालेख तथा प्राकृत साहित्य परम्परा : राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी दि. 24 से 28 दिसम्बर, 2014 तक 60 से अधिक प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, कन्नड, जापानी, हिन्दी आदि के शोध अध्येता विद्वानों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। संगोष्ठी के उद्घाटनकर्त्ता प्रो. वृषभप्रसाद जैन, लखनऊ एवं अध्यक्ष–प्रो. राजाराम जैन, नोएडा थे। संगोष्ठी में श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. जयकुमार जैन, महामन्त्री डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन, शास्त्रि परिषद् के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, प्रो. भागचन्द जैन 'भास्कर', प्रो. सुदर्शनलाल जैन, प्रो. अशोककुमार जैन, प्रो. सुदीप जैन, प्रो. वीरसागर जैन, प्रो. कमलेश जैन, जापानी अध्येता प्रो. युताका कावासाकी, प्रो. कुजीनागा कावासाकी, मिसेज मसाकी मोरी, डॉ. हम्पा नागराजय्या, प्रा.निहालचंद जैन, डॉ. शिखरचंद जैन, प्रो. विजयकुमार जैन, डॉ. राका जैन, डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, पं. पवन शास्त्री, प्रो. शुभचन्द्र जैन, प्रो. फूलचन्द 'प्रेमी', डॉ. सीमा जैन, डॉ. मीना जैन, डॉ. अनेकान्त जैन, श्रीमती क्रान्ती जैन, पं. कोमलचन्द जैन, डॉ. विजयलक्ष्मी जैन, डॉ.शांतिसागर शिरहट्टी, प्रो. बी.एस. सण्णय्या, डॉ. सी. पी. कुसमा, श्री राजेन्द्र पाटिल, पं. अभयकुमार जैन आदि विद्वानों ने आचार्य परम्परा एवं चन्द्रगिरि के शिलालेखों, इतिहास आदि से संबंधित शिलालेखों का वाचन किया।

प्रथम दिवस उद्घाटन के पूर्व सभी विद्वानों ने परम पूज्य आचार्य श्री सच्चिदानन्द जी महाराज एवं स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक जी के नेतृत्व में चन्द्रगिरि दर्शन यात्रा की। सभी विद्वान् चन्द्रगिरि के शिलालेखों में वर्णित आचार्यों के नाम के साथ नमोस्तु अभिव्यक्त करने वाली पट्टिका लिये हुए थे। चन्द्रगिरि पहुंचने पर स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक जी ने चन्द्रगिरि के मुख्य शिलालेख एवं चन्द्रगिरि वसदि का परिचय दिया। प्रारंभिक भूमिका संस्थान के निदेशक डॉ. रमेशचन्द जैन ने वर्णित की तथा चन्द्रगिरि के शिलालेखों एवं कन्नड जैन संस्कृति का परिचय दिया। स्वामी जी ने सभी आचार्यों के अर्घ बोलकर श्री भद्रबाहु स्वामी के चरणों की पूजा विद्वानों से क्रमशः सम्पन्न करवायी।

संगोष्ठी के समापन पर दक्षिण की परम्परा के अनुरूप श्रुत पूजा का विशेष आयोजन वाद्य यंत्रों, विद्वानों के द्वारा चारों अनुयोगों के पाठ, विद्वानों को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मान के साथ किया गया। इस अवसर पर स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक ने कहा कि शास्त्रों के वेष्टन स्वरूप अंगवस्त्र विद्वानों को भेंट किये जाते हैं। अंग माने शास्त्र और वस्त्र से तात्पर्य वेष्टन से है। यह विद्वानों के हृदय में विराजमान जिनवाणी का सम्मान है। श्री स्वामी जी ने इस अवसर पर सभी विद्वानों को पंचमेवा भेंट कर प्रत्येक विद्वान् को श्रुत पूजा के उपलक्ष्य में बारह हजार (द्वादशांग जिनवाणी स्वरूप) या चौबीस हजार (चौबीस तीर्थंकर की दिव्यध्वनि स्वरूप) अपने द्वारा लिखित पुस्तक के प्रकाशन हेतु भिजवाने की घोषणा की। संस्था के कार्याध्यक्ष श्री जे. इन्द्रकुमार, ट्रस्टी श्री मंजैया, निदेशक डॉ. रमेशचन्द जैन ने सभी विद्वानों का सम्मान किया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. रमेशचन्द जैन द्वारा अनुवादित एवं सम्पादित 'प्राकृत गौरवम्' कृति का विमोचन स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक जी ने किया तथा अनुवादक डॉ. रमेशचन्द जैन का विशेष सम्मान किया। संगोष्ठी के प्रत्येक सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत शिलाशासन नाटक, भक्तिसंगीत, प्राकृत कवि सम्मेलन आदि आयोजन किये गये। सभी विद्वानों ने सपरिवार श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली स्वामी की प्रतिमा तथा विंध्यगिरि तथा चन्द्रगिरि एवं जिननाथपुरम् आदि के दर्शन कर धर्मलाभ लिया। एक महत्त्वपूर्ण अनुपम आयोजन के रूप में यह महोत्सव एवं संगोष्ठी याद की जायेगी।

प्रस्तुति–डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन
पार्श्व ज्योति मंच, सनावद (म.प्र.),

चन्द्रगिरि महोत्सव की झालकियां

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

मुक्तागिरि में जिनबिंब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का शानदार शुभारम्भ

मुक्तागिरि की सुरक्षा जैन समाज का कर्तव्य - मुनिश्री समता सागरजी महाराज

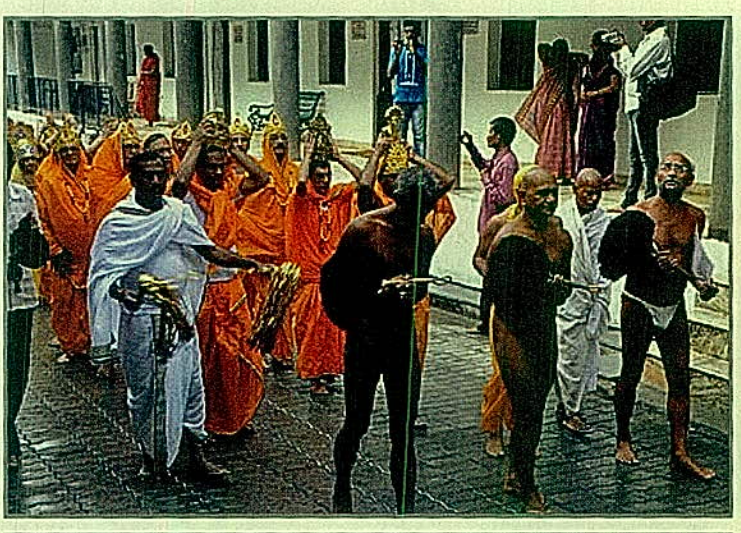

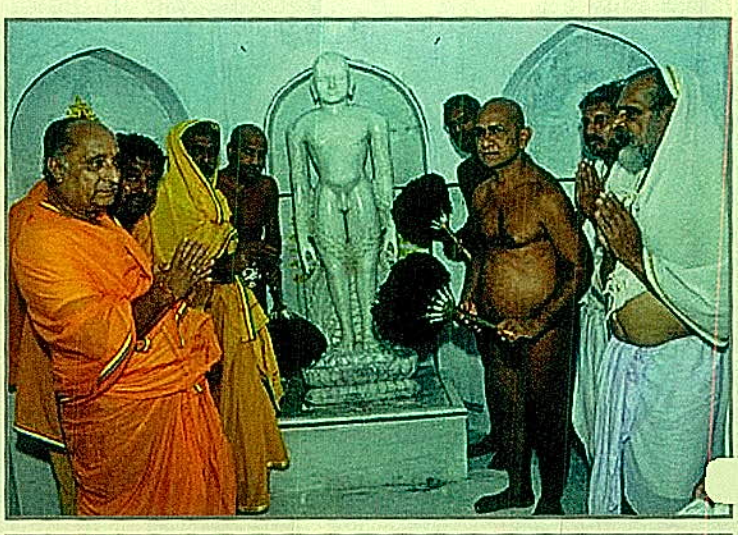

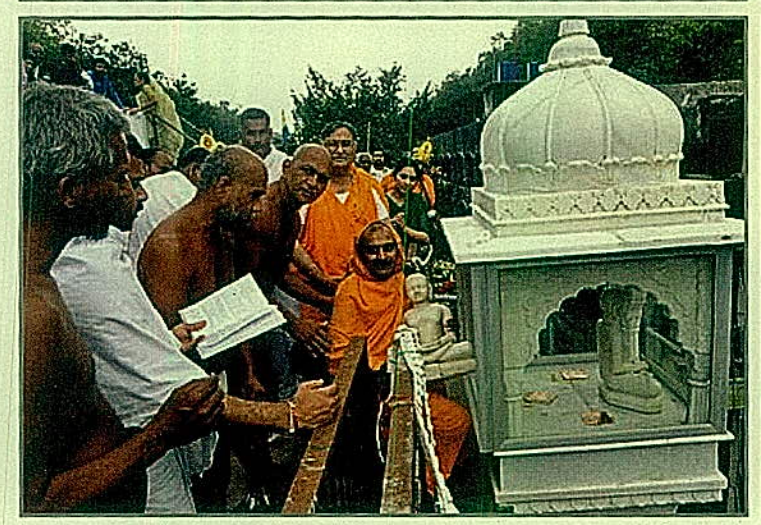

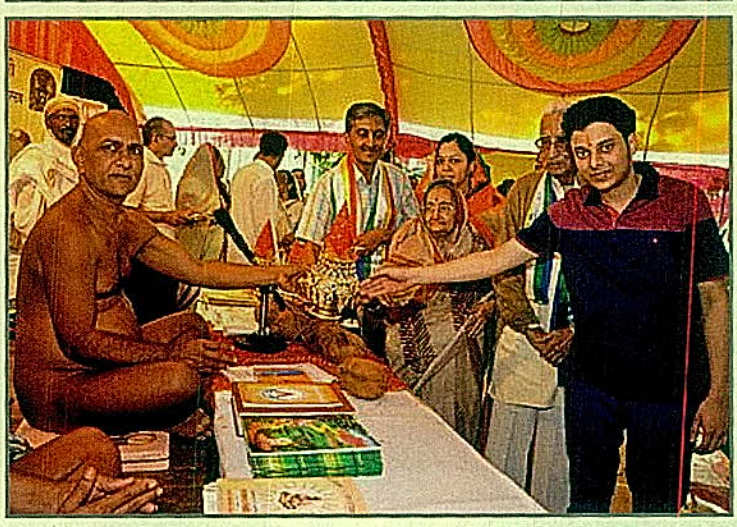

परतवाड़ा - मुक्तागिरि में श्री जैनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा एवं मानस्तंभ प्रतिमा स्थापना महोत्सव का दो दिवसीय आयोजन सुबह सात बजे भव्य पदयात्रा के साथ शुभारम्भ हुआ। अष्टकुमारिका सिर पर मंगल कलश लेकर पारंपरिक वेशभूषा में शामिल हुई, जिन्होंने जिन प्रतिमा की शोभायात्रा में भगवान महावीर की आराधना की। सुबह आठ बजे मंगलाष्टक, मंगलाचरण, गुरुआज्ञा, मंडप शुद्धि के साथ नागपुर से पधारे श्री संतोष जैन के शुभहस्ते ध्वजारोहण किया गया। दस बजे तक मंडप प्रतिष्ठा नित्याभिषेक, वेदी शुद्धिकरण, वेदी संस्कार का आयोजन श्री शिरीष चवरे, कारंजा व अन्य इंद्र-इंद्राणी द्वारा सम्पन्न हुआ। दोपहर बारह बजे योग मंडल विधान, पंच परमेष्ठी गुणों की पूजा की गई। दोपहर दो बजे से 108 मुनिश्री समता सागरजी महाराज का प्रवचन हुआ, शाम साढ़े छह बजे मंगल आरती के बाद आस-पास के जैन मंदिरों के अध्यक्षों का सत्कार किया गया, जिसमें सर्वश्री प्रकाश जैन, गुलाबचंदजी गंगवाल परतवाड़ा, सतीश संगई भातकुली, महावीर पाटणी वर्धा आदि का समावेश है। इस कार्यक्रम में विद्यासागरजी महाराज के प्रतिमा का सूत्रअनावरण किया गया। देर शाम राज्यमंत्री श्री प्रवीण पोटे का आगमन हुआ, जिन्होंने मुनिश्री समतासागरजी महाराज का आशीर्वाद लिया। संस्थान की ओर से श्री पोटे का शॉल-श्रीफल देकर स्वागत किया गया। श्री पोटे ने श्री मुक्तागिरि का दौरा कर विश्वत मंडल से करीब आधा घंटे चर्चा कर समस्याएं सुनी और जल्द ही उनका निराकरण करने का विश्वास जताया। श्री पोटे के साथ जिले के आला अधिकारी सहित पुलिस का काफिला मौजूद था। आयोजन में देश के कोने-कोने से भक्तगण शामिल हुए।

दो दिवसीय समारोह का मांगलिक उद्घाटन मुंबई के श्री अरुण जैन के कर-कमलों द्वारा हुआ जिसमें पंडित आदेश कुमार शास्त्री वैद्य के मार्गदर्शन से विद्यासागर संगीत मंच ने प्रवचन के पूर्व गीत प्रस्तुत किया। प्रवचन में मुनिश्री समतासागर जी महाराज ने कहा कि आज देश में आतंक मचा है। हर कोई एक दूसरे की जान का दुश्मन बन बैठा है। इस देश में जिस प्रकार महात्मा गांधी ने अहिंसा से देश को आजादी दिलाई उसी मार्ग पर चलने से मोक्ष की प्राप्ति होगी। मुनिश्री ने कहा कि मुक्तागिरि मुनियों की धरती है। यहां के प्राचीन मंदिरों की धरोहर की सुरक्षा करना हर जैन भक्त का कर्तव्य है।

मुक्तागिरि में जिनबिंब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव की झलकियाँ

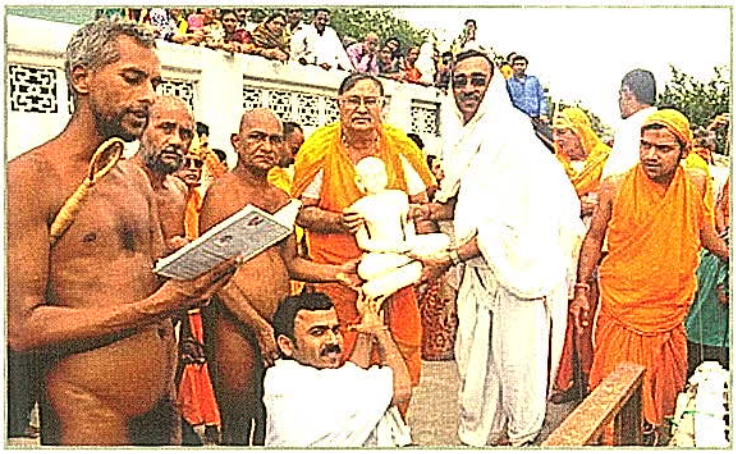

प्रतिभावान जैन छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह

नई दिल्ली। सराकोद्धारक आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के सान्निध्य में 15वाँ अखिल भारतीय जैन प्रतिभावान छात्र सम्मान समारोह ज्ञान प्रतिभा संस्थान, सूर्यनगर के तत्वावधान में यमुना स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स सभागार, विवेक विहार में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री जिनेन्द्र कुमार जैन जे.डी. के अनुसार समारोह में इस वर्ष 10वीं एवं 12वीं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले देशभर के 710 छात्र-छात्राओं को प्रशस्तिपत्र, स्मृतिचिह्न, मेडल, शील्ड एवं साहित्य स्कॉलरशिप आदि प्रदान कर सम्मानित किया गया। दसवीं में कुमारी सोनल जैन (कर्नाटक), चन्द्रनाथन जैन (तमिलनाडु), 12वीं में कार्तिका जैन (तमिलनाडु), रूपल जैन (मेरठ), मेघना जैन (दिल्ली) प्रथम रहे। अनेक छात्र-छात्राओं ने अपनी सफलता के श्रेय माता-पिता व गुरुजनों से मिले संस्कार व अच्छी शिक्षा को दिया। इस आयोजन की विशेषता यह रही कि अधिकतर छात्र-छात्रा ऐसे थे जिन्होंने अपनी कक्षा में 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये। बिहार, झारखण्ड, तमिलनाडु, कर्नाटक, पांडिचेरी, राजस्थान व गुजरात सहित लगभग बीस राज्यों से आये छात्र-छात्राओं ने इस समारोह में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

आचार्यश्री ने अपने प्रेरक एवं विद्वतापूर्ण उद्बोधन में छात्रों को अहिंसक-शाकाहारी एवं व्यसनमुक्त जीवन शैली अपनाने का संकल्प दिलाते हुए समाज एवं देश का उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी। किसी भी देश का भविष्य छात्रों पर निर्भर रहता है- यदि आपके अंदर संस्कार नहीं है तो आपकी सारी शिक्षा बेकार है। उन्होंने आगे देश के निर्माण, स्वतंत्रता आंदोलन एवं विकास में जैनसमाज के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य मात्र डिग्री अथवा आजीविका प्राप्त करना नहीं बल्कि परोपकार करते हुए आत्मा से परमात्मा बनना है। शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए जो इंसान को कंकर से शंकर बना सके। माता-पिता की आज्ञा मानना, समाज की सेवा करना यही भारती संस्कृति है। समाज व देश का उज्ज्वल भविष्य आप प्रतिभावान छात्रों पर ही निर्भर है।

समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय इस्पात मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने आचार्यश्री को भावभीनी विनयांजलि अर्पित करते हुए कहा कि दिगम्बर संतों की साधना से इस लोक के साथ-साथ परलोक भी सुधार सकते हैं। छात्रों को आशीर्वाद देते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'मेक इन इंडिया' मिशन- आप ही चरितार्थ करेंगे इसी से भारत समूची मानवता को मार्गदर्शन देगा।

आचार्यश्री के सान्निध्य में गठित ऑल इंडिया जैन डॉक्टर्स फॉरम के महासचिव डॉ. ए.के.जैन एवं डॉ. नरेन्द्र जैन ने वैज्ञानिक तथ्यों सहित शाकाहारी जीवन शैली को श्रेष्ठ बताते हुए इसे अपनाने तथा इसका प्रचार-प्रसार करने की प्रेरणा दी। उनके निर्देशनमें बनी सीडी 'वेजिकॉन' का लोकार्पण माननीय मंत्री जी ने किया। छात्र-छात्राओं ने प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। आचार्यश्री ने अलग से छात्रों से विचार-विमर्श खुली चर्चा भी की और विद्वानों द्वारा उन्हें कैरियर काउंसिलिंग भी करायी गयी।

समारोह में ब्र. अनीता दीदी, सर्वश्री कैलाश गदिया, ए.एस. मेहता, रितेश जैन, कमलेश जैन, ज्ञानचन्द जैन, योगेश जैन (खतौली), अनिल जैन, जिनेन्द्र जैन(जेडी), संजीव जैन, स्वराज जैन (टाइम्स ऑफ इंडिया), राजेन्द्र महावीर सनावद, राजीव जैन, जम्बूप्रसाद जैन, विपिन जैन, राकेश जैन, सुभाष जैन (बड़ागाँव) सतीश जैन, हेमचंद जैन आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहकर समारोह को गरिमा प्रदान की। समारोह का सफलतापूर्वक संचालन श्री मनोज जैन (आगरा) ने किया।

- स्वराज कुमार जैन (टाइम्स ऑफ इंडिया), नई दिल्ली

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

संतो हि हितभाषिणः (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325)। अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं।

श्री सम्मेदशिखर जी में श्री 1008 चौबीस समवशरण महामण्डल विधान गुणायतन एवं श्री सेवायतन अधिवेशन एवं पिच्छिका परिवर्तन समारोह सोल्लास सम्पन्न

भव्य शोभायात्रा एवं ध्वजारोहण पूर्वक विधान महामहोत्सव का शुभारम्भ

26 दिसम्बर, 2014

श्री सम्मेदशिखरजी, गुणायतन (मधुबन) दि. 1 जनवरी। शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी की पावन धरा पर संत शिरोमणि प.पू.108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक, प्रखर प्रवक्ता, युवाशिष्य, निर्ग्रन्थ गौरव प.पू. 108 मुनिश्री प्रमाण सागरजी महाराज एवं प.पू.108 मुनिश्री विराट सागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य मे दिनांक 26 दिसम्बर 2014 से दिनांक 31 दिसम्बर, 2014 तक श्री 1008 चौबीस समवशरण महामण्डल विधान 'गुणायतन' के नवीन भूखण्ड पर अपूर्व उल्लास, उमंग एवं प्रभावना पूर्वक, गुणायतन श्री सेवायतन अधिवेशन, भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह के सानंद सम्पन्न हुआ। देश और विदेश से पधारे हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने विधान में सम्मिलित होकर धर्मलाभ लिया। श्री सम्मेदशिखर जी के इतिहास में प्रथम बार एक ही स्थान पर 24 समवशरणों की नयनाभिराम रचना के साथ समवशरण विधान का आयोजन हुआ जो अपूर्व धर्मप्रभावना एवं आकर्षण का केन्द्र बना रहा। प्राचीन कवि पं. धुंवालालजी द्वारा रचित समवशरण विधान के आधार पर विधान की संपूर्ण विविध आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य व्रती विधानाचार्य बा. ब्र. अशोक भैया जी इंदौर एवं संघस्थ बा. ब्र. रोहित भैया जी के कुशल निर्देशन में संपन्न हुआ। गुणायतन के स्थायी युवा विद्वान पं. राहुल शास्त्री ने भी इसमें अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

उक्त विधानका शुभारम्भ 26 दिसम्बर, 2014 को प्रातः समय भव्य शोभायात्रा पूर्वक हुआ। शिखरजी के इतिहास में यह अपने ढंग का अनूठा शोभायात्रा था जिसमें एक साथ 96 कलात्मक पालकियों में 96 जिन प्रतिमाओं को विराजमान करके 1008 घट कलशों के साथ शोभायात्रा निकाली। इस शोभायात्रा में केसरिया धोती दुपट्टे में पुरुष वर्ग पालकियों को उठाये चल रहे थे तो सफेद परिधानों में सुसज्जित महिलाएं अपने मस्तक पर घट कलश लेकर चल रही थी। साथ में नृत्य करते श्रद्धालु नर-नारी बाजे-गाजे के साथ सम्मिलित हुए। संपूर्ण शोभायात्रा की अद्भुत छटा अभूतपूर्व थी और संपूर्ण शिखरजी में यह प्रसन्नतामय चर्चा का विषय बना रहा।

शोभायात्रा के समवशरण मंदिर, तेरहपंथी कोठी, म्यूजियम मंदिर से प्रारम्भ होकर विधान स्थल पर पहुंचते ही जैन जगत के प्रख्यात श्रेष्ठी, श्रावक शिरोमणि, चक्रवर्ती तुल्य उदारता के धनी गुणायतन के शिरोमणि संरक्षक श्री अशोक कुमार जी पाटनी (आर.के.मार्बल) एवं उनकी स्वनामधन्य धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला पाटनी एवं परिवार के कर-कमलों द्वारा गगनभेदी जयकारों के साथ ध्वजारोहण पूर्वक विधान महामहोत्सव का शुभारम्भ हुआ। ध्वजारोहण के उपरांत दिव्य साज-सज्जायुक्त भव्य एवं विशाल पाण्डाल का उद्घाटन प्रसिद्ध श्रेष्ठी श्री निकुंज जयंतीलाल महतो बैंगकॉक के कर-कमलों द्वारा किया गया। उद्घाटन के उपरांत घट घट कलशों द्वारा पाण्डाल एवं नवनिर्मित 24 समवशरणों की शुद्धि एवं श्रीजी के अभिषेक पूर्वक, श्रीजी को समवशरणों की कमलासन युक्त वेदियों

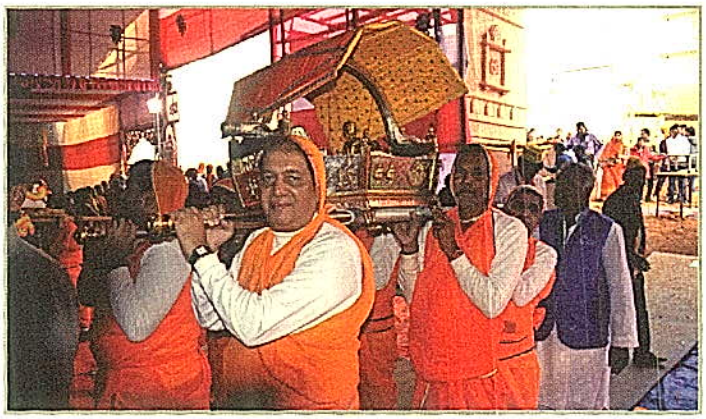

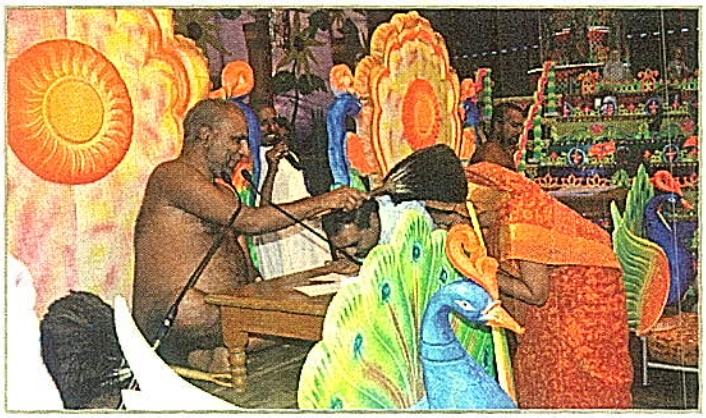

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया। अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड़, गा.10)

गुणायतन में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

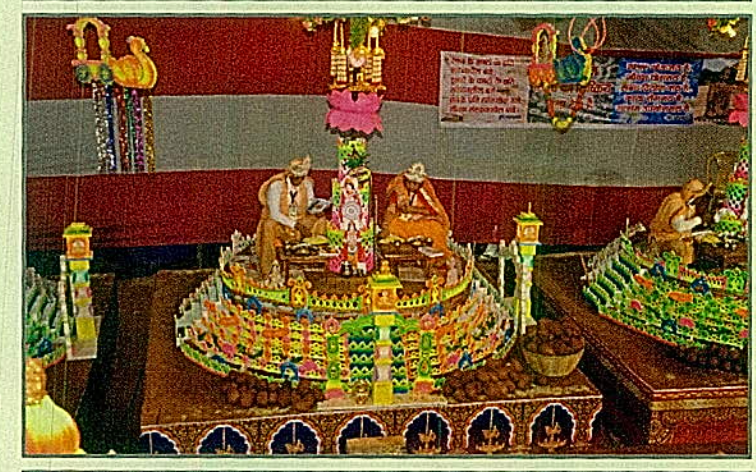

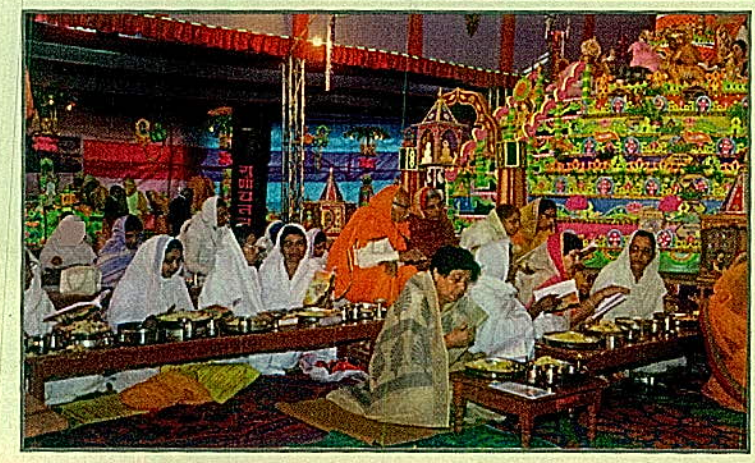

णायं णरस्स सारो (दंसणपाहुड़, गा.31)। अर्थ- मनुष्य का सार ज्ञान है।

पर विराजमान किया गया। दो मुख्य विशाल समवशरण सहित अन्य 22 समवशरण, 24 चक्रवर्ती, सौधर्म आदि इन्द्र यज्ञनायक, कुबेर 96 जिन प्रतिमा, विविध रंगों के परिधानों और आकर्षक मुकुट हार, कुण्डल, बाजूबन्द से सुसज्जित इन्द्र इन्द्राणियों से भरा कलात्मक पाण्डाल ऐसा सुशोभायमान हो रहा था मानो स्वर्ग अपनी संपूर्ण वैभव एवं सौंदर्य के साथ समवशरण की आराधना हेतु धरती पर अवतरित हो गया है।

उक्त मांगलिक वेला पर पू. मुनि श्री प्रमाणसागरजी महाराज ने अपने मांगलिक आशीर्वचन में अपार जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि एक तीर्थंकर के काल में एक ही तीर्थंकर के समवशरण की रचना और आराधना होती है। परन्तु आज यहां इस परम पावन तीर्थराज पर एक साथ 24 तीर्थंकरों के समवशरण में स्थापना निक्षेप के माध्यम से भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। एक साथ 96 प्रभु का विहार होते हुए समवशरण में आना अभूतपूर्व है। पूज्य मुनि श्री ने कहा कि इस महामहोत्सव का प्रयोजन मात्र ताम-झाम नहीं अपितु जीवन को सही दृष्टि एवं दिशा देना है। समवशरणों की यह भव्य रचना एवं आराधना हमारे अंतरंग की विशुद्धि को बढ़ाते हुए सम्यग्दर्शन की भूमिका बनाएगा।

27 दिसम्बर, 2014

विधान पूजन एवं गुणायतन-श्री सेवायतन अधिवेशन

27 दिसम्बर, 2014 को प्रातः इन्द्र प्रतिष्ठा, सकलीकरण, अभिषेक शांतिधारा एवं नित्य नियम पूजन पूर्वक विधान की संगीतमय पूजा विधिवत प्रारम्भ हुई। प्रख्यात संगीतकार राजीव जैन, अशोक नगर के मधुर स्वर एवं साज ने लोगों को पूजा में आनंद के साथ झुमा दिया।

मध्याह्न समय संत शिरोमणि प.पू.108 आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद एवं पूज्य गुरुदेव मुनि प्रमाण सागर जी महाराज की दिव्य अभिकल्पना एवं प्रेरणा से गठित 'गुणायतन' एवं श्री सेवायतन का संयुक्त अधिवेशन सम्पन्नहुआ जिसमें विस्तार से दोनों संस्थाओं के उद्देश्य, कार्यप्रणाली एवं प्रगति पर विचारों का आदान-प्रदान हुआ। श्री सेवायतन ने सेवा कार्यों को सतत् रखते हुए प्रदूषण युक्त स्वच्छ मधुबन के निर्माण का प्रस्ताव पारित किया तथा 'गुणायतन' ने तीर्थराज पर जैनधर्म के मौलिक ज्ञान एवं जैनआगमों में वर्णित 14 गुणस्थानों पर आधारित आत्मा से परमात्मा बनने के संपूर्ण विज्ञान को आधुनिकतम वैज्ञानिक तकनीकी माध्यमों से जीवंत चित्रण के साथ दर्शकों को परिचित कराने का जो पू. गुरुदेव की अभिकल्पना है उसे जन आकांक्षाओं के अनुरूप 2 वर्ष की समय सीमा में पूर्ण करने का संकल्प प्रस्ताव पारित किया। गुणायतन के अध्यक्ष श्री विनोद काला कोलकाता ने आगत श्रद्धालुओं का अभिनंदन करते हुए गुणायतन परियोजना को मिल रहे अपार जन समर्थन और सहयोग के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए लोगों से गुणायतन से उदारतापूर्वक जुड़ने का आह्वान किया।

उक्त संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करते हुए देश के प्रख्यात मनीषी वयोवृद्ध विद्वान पं. मूलचन्द जी लुहाड्या ने श्री सेवायतन के सेवा कार्यों की प्रशंसा की तथा गुणायतन के संबंध में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि 'गुणायतन' पूर्वाचार्यों द्वारा रचित ग्रंथों की ही तरह एक संपूर्ण ग्रन्थ है जिसमें जीवंत चित्रों के द्वारा जैन धर्म की मौलिकताओं से परिचय कराया जायेगा जो आत्मा के गुणात्मक विकास का प्रबल निमित्त बनने के साथ-साथ जिनधर्म की प्रभावना का अनूठा एवं अमर दस्तावेज होगा।

पूज्य गुरुदेव ने संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करते हुए श्री सेवायतन के सेवा कार्यों को गति प्रदान करने की प्रेरणा दी। 'गुणायतन' के संबंध में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए पू. गुरुदेव ने कहा कि 'गुणायतन' प्रोजेक्ट नहीं अपितु आत्मा में छिपे अनंत गुणों को पहचानने का एक अधिष्ठान है। इस परम पावन तीर्थराज पर गुणायतन की परिकल्पना साकार हो जाएगी तब वह अनेकों भव्य आत्माओं के अंतरंग में आत्मिक विशुद्धि के साथ-साथ सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति का प्रबल निमित्त बनेगा। उपस्थित जनसमुदाय को प्रेरणा देते हुए पू. मुनिराज ने कहा कि अपने आत्मा के गुणित विकास एवं अपनी चंचला लक्ष्मी के लिए गुणायतन से जुड़कर सातिशय पुण्य के भागी बनें। पू. मुनिश्री के प्रेरक उद्‌बोधन से प्रभावित होकर गुणायतन के लिए दान राशि की बौछार हो गयी। महिलाओं ने अपने तन के आभूषण उतार कर दे दिये। बच्चों ने अपने गुल्लक की राशि प्रदान करने की घोषणा कर दी तथा गुणायतन की विभिन्न योजनाओं से जुड़ने वालों की लंबी कतार लग गयी। उल्लेखनीय है कि इन्हीं घोषणाओं के मध्य दूरदर्शन पर कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखते हुए डॉ. महेन्द्र जैन पाण्ड्या इंदौर निवासी अमेरिका प्रवासी ने फोन के माध्यम से गुणायतन से शिरोमणि संरक्षक के रूप में जुड़ने की स्वीकृति प्रदान की जिसका तालियों की गड़गड़ाहट के साथ अनुमोदना हुई। इसी क्रम में प्रसंगवशात् उल्लेखनीय है कि शिरोमणि संरक्षक के रूप में निम्न उदारमना महानुभावों ने भी अपनी स्वीकृति प्रदान की- (1) श्री कन्हैयालाल जी दीपक जी सेठी औरंगाबाद (बिहार) बंगलौर (2) श्री विमल, विकास विशाल गोधा, दुबई (आसाम) (3) श्री निकुंज जयंतीलाल महतो, बैंगकॉक (4) श्री पंकज जैन चेयरमैन पारस चैनल।

उक्त अपार जनसमर्थन का ही यह प्रभाव है कि गुणायतन की योजना और प्रभावना में निरंतर गुणात्मक विकास का क्रम जारी है।

28 दिसम्बर, 2014

विधान पूजन एवं भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह

प्रातः समय नित्य की भांति अभिषेक, शांतिधारा, नित्य पूजन एवं विधानकी पूजा संगीत की स्वर लहरियों के साथ भक्ति एवं नृत्य पूर्वक सम्पन्न हुआ। पूज्य गुरुदेव ने प्रातःकालीन प्रावधान के मध्य श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि विधान-पूजन जीवन के रुपान्तरण का प्रयोग एवं हमारे गुणात्मक परिवर्तन एवं विकास का निमित्त है। आत्म कल्याण के लिए साधना के मार्ग को अंगीकार करना अनिवार्य है। परन्तु साधना का मार्ग कठिन होता है जो सहज साध्य नहीं। अतः प्रारंभिक भूमिका में आराधना का मार्ग अंगीकार करते हुए जो साधना के पथ पर अग्रसर है तथा जिन्होंने साधना से सिद्धि प्राप्त कर ली है उनके गुणों की आराधना करो। समवशरण विधान का प्रस्तुत आयोजन आराधना का महा महोत्सव है। वे सभी धन्यभागी हैं जो इसमें भाग ले रहे हैं।

मध्याह्न समय पिच्छिका परिवर्तन समारोह भव्य प्रभावनापूर्वक पिच्छिका आदान-प्रदान की आकर्षक प्रस्तुति के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें श्रद्धालुओं की सर्वाधिक उपस्थिति हुई। कलात्मक मयूर पक्षी द्वारा आचार्यश्री के पास से पिच्छी

गुणायतन में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

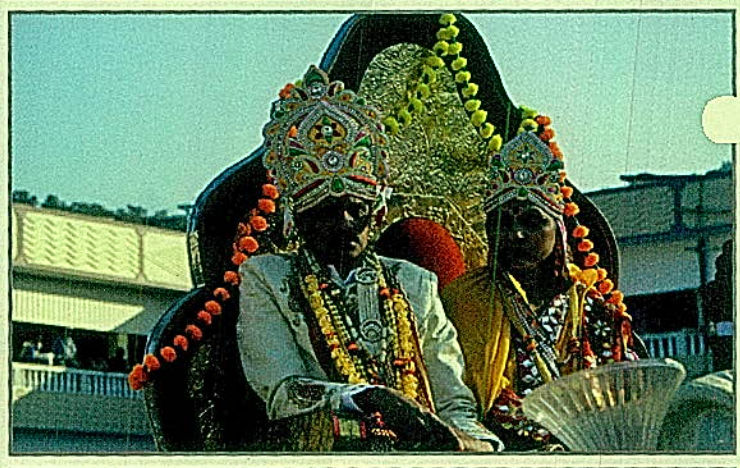

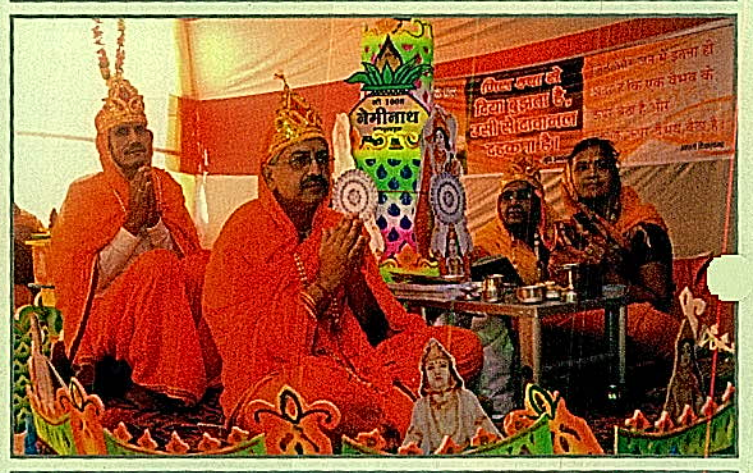

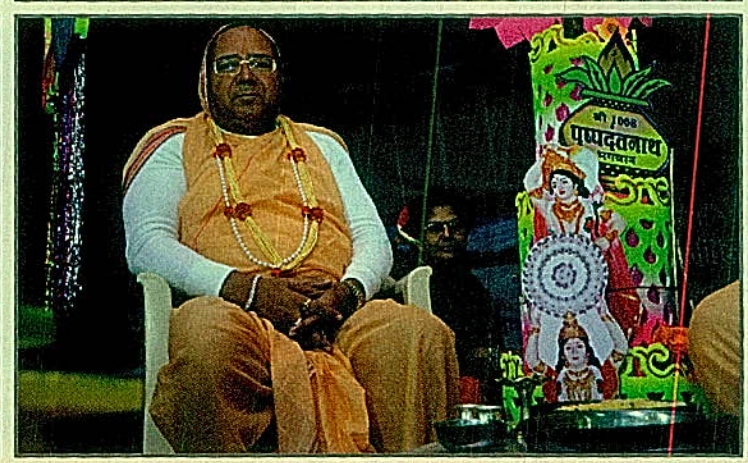

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

आकाश मार्ग से उड़ते हुए लेकर आने के दृश्य को देखकर लोग अभिभूत हो उठे। वयोवृद्ध विद्वान आदरणीय पं. मूलचन्द जी लुहाड्या ने पू. मुनिद्वाय के प्रति अपनी विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए पिच्छी एवं पिच्छीधारी की महत्ता एवं आवश्यकता बतायी तथा पिच्छी के मर्यादा के प्रति सजग रहने की आवश्यकता पर बल दिया।

प.पू. मुनिश्री विराट सागरजी महाराज के कर-कमलों में नयी पिच्छी देने का सौभाग्य विपिन जैन मधुबन, सागर रारा डाल्टनगंज, विशाल काला-धुलियान, दीपक जैन कोलकाता को प्राप्त हुआ तथा उनकी पुरानी पिच्छी को ग्रहण करने का सौभाग्य श्री तेजकुमार सुशीला टोंग्या हाटपीपल्या को प्राप्त हुआ।

प.पू.मुनिश्री प्रमाण सागरजी महाराज के पावन कर-कमलों में नयी पीछी देने का सौभाग्य श्री नरेन्द्र मंजू सेठी, गया एवं दीपक रूपल सेठी बेंगलोर को प्राप्त हुआ। पू. मुनिश्री की पुरानी पीछी प्राप्त करने का सौभाग्य देश के विख्यात हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. सुहाष शाह मुंबई एवं उनकी धर्मपत्नी प्रसूति रोग विशेषज्ञ श्रीमती मोनिका शाह मुंबई का संयुक्त रूप से प्राप्त हुआ। ये युवा दंपति चिकित्सा के क्षेत्र में रहते हुए भी व्रती जीवन की साधना में संलग्न हैं। उपस्थित जनसमुदाय ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इस चयन का अनुमोदना एवं प्रशंसा किया।

पूज्य मुनिश्री ने इस अवसर पर अपने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि पिच्छिका परिवर्तन समारोह एक औपचारिकता मात्र नहीं अपितु हृदय परिवर्तन का प्रबल निमित्त है। यद्यपि यह कार्य बन्द कमरे में भी सम्पन्न किया जा सकता था परन्तु लोगों को पीछी एवं पीछीधारियों की महिमा का ज्ञान कराने एवं संयम नियम की धारा से जोड़ने के लिए इस आयोजन का विशिष्ट महत्व है। पीछी आदान प्रदान के दृश्य को देखकर लोग भावुक हो उठते हैं जो उनके हृदय परिवर्तन का प्रबल निमित्त बनता है। यही इस समारोह की सार्थक उपादेयता है। आप पीछी ग्रहण करने वाले सौभाग्यशाली दंपति डॉ. सुहाष शाह एवं डॉ. मोनिका शाह मुंबई के साधक जीवन की प्रशंसा करते हुए कहा कि आपको विषम समय में चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े रहने के बावजूद ये व्रती जीवन की साधना कर रहे हैं जो एक दुर्लभ उदाहरण है। आज इन्होंने पुरानी पीछी प्राप्त की है मेरी प्रबल भावना एवं आशीर्वाद है कि इन्हें शीघ्र ही नवीन पीछी प्राप्त हो।

29 एवं 30 दिसम्बर, 2014
विधान पूजन एवं विविध कार्यक्रम

29 एवं 30 दिसम्बर 2014 को प्रतिदिन की भाँति प्रातः अभिषेक शांतिधारा, नित्य पूजन, विधान पूजनएवं प्रवचन का कार्य सम्पन्न हुआ। दिनांक 29 दिसम्बर, 2014 को मध्याह्न समय पू. गुरुदेव द्वारा समवशरण की संपूर्ण रचना का ध्यानात्मक प्रक्रिया द्वारा परिचय कराया, जिससे उपस्थित जनसमुदाय एवं पारस चैनल पर सीधा प्रसारण देखने वाले दर्शन अत्यन्त अभिभूत हो उठे (लगभग एक घण्टे की इस ध्यानात्मक प्रक्रिया में अपार आनंद की अनुभूति के साथ समवशरण की रचना को समझाने का सौभाग्य जन समुदाय को मिला जो अभूतपूर्व है।

रात्रि समय प्रतिदिन की तरह महाआरती प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

31 दिसम्बर, 2014
विश्व शांति महायज्ञ एवं सामूहिक परिक्रमा

31 दिसम्बर को प्रातः अभिषेक शांतिधारा एवं विधान पूजन के समापना उपरांत हवन पूर्वक जाप्य मंत्र की आहुति पूर्वक विश्व शांति महायज्ञ पूर्वक विधान सम्पन्न हुआ।

मध्याह्न समय 24 समवशरणों की सामूहिक परिक्रमा के अपूर्व दृश्य से श्रद्धालु अभिभूत हो उठे। इस परिक्रमा में आगे-आगे श्री पप्पूजी गंगवाल, साड़म एवं श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ट्रस्टी एवं मंत्री गुणायतन केशरिया ध्वज लेकर चल रहे थे। उनके पीछे पू. मुनिसंघ त्यागी व्रती, विधान के सभी पात्र अपनी-अपनी सुसज्जित वेश-भूषा में और उसके बाद सामान्य श्रद्धालु जन चल रहे थे। पूज्य गुरुदेव द्वारा 24 तीर्थंकरों का मंत्रोच्चार हो रहा था जिसे लोग सामूहिक रूप से दोहराते थे जिसके कारण पूरे पाण्डाल का वातावरण भक्ति के अपूर्व रस में सराबोर हो गया था।

दिनांक 29, 30 एवं 31 दिसम्बर, 2014 को शिखरजी गुणायतन में प.पू. मुनिश्री प्रमाण सागरजी महाराज के दर्शन करने एवं उनके विधान में भाग लेने हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री पंकज जैन (चेयरमैन-पारस चैनल) एवं मंत्री श्री खुशाल जैन 'सी.ए.' (मुंबई) पहुंचे। उसके बाद पहाड़ की वंदना की और वहाँ की व्यवस्था का जायजा लिया गया।

समापन एवं आभार प्रदर्शन

विधान की संपूर्ण अविध पू. गुरुदेव द्वारा उद्बोधित प्रवचन एवं संध्या समय होने वाले जिज्ञासा समाधान के कार्यक्रम से अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। उक्त महोदय के सभी कार्यक्रमों का पारस चैनल द्वारा सीधा प्रसारण से देश-विदेश के लाखों श्रद्धालुओं ने घर बैठे धर्म साधना की। पारस चैनल के इस प्रयास के लिए पूज्य गुरुदेव ने चैनल के पदाधिकारी एवं प्रबंधकों को साधुवाद प्रदान किया। पारस चैनल के इस स्तुत्य प्रयास के लिए इस महामहोत्सव में उपस्थित श्री पंकज कुमार जैन, चेयरमैन एवं उनके सहयोगियों का गुणायतन परिवार ने भावभीना स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया। श्री पंकज जी ने इस अवसर पर गुणायतन से शिरोमणि संरक्षक के रूप में जुड़ने की घोषणा की, जिसका अपूर्व स्वागत हुआ। इसी क्रम में पू. गुरुदेव के बहुचर्चित एवं प्रशस्ति जिज्ञासा समाधान का आगामी वर्ष 2015 तक का प्रसारण जारी रखने के लिए 12 दान दाताओं ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर संपूर्ण 2015 वर्ष तक जिज्ञासा समाधान का प्रसारण सुनिश्चित किया।

मध्याह्न समय परिक्रमा के उपरांत विधान के मुख्य पात्रों एवं कार्यकर्ताओं का भावभीना स्वागत किया गया।

गुणायतन के शिरोमणि संरक्षक एवं प्रथम मुख्य समवशरण के मुख्य चक्रवर्ती श्री अशोक जी पाटनी, किशनगढ़ (आर.के.मार्बल) का भावभीना स्वागत गुणायतन के पदाधिकारियों ने किया।

पूज्य मुनि श्री ने श्री अशोक जी के उदारमना व्यक्तित्व, धार्मिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक अवदानों की प्रशंसा करते हुए उन्हें वर्तमान के चक्रवर्ती की उपमा से संबोधित करते हुए उनके सादगी पूर्ण विराट व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर धर्म संस्कृति एवं समाज के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा दी।

दान, पूजा, तीर्थाटन आदि यदि सम्यग्ज्ञान से सुशोभित है तो वे मुक्ति के कारण हैं (उत्तर पुराण)

गुणायतन में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

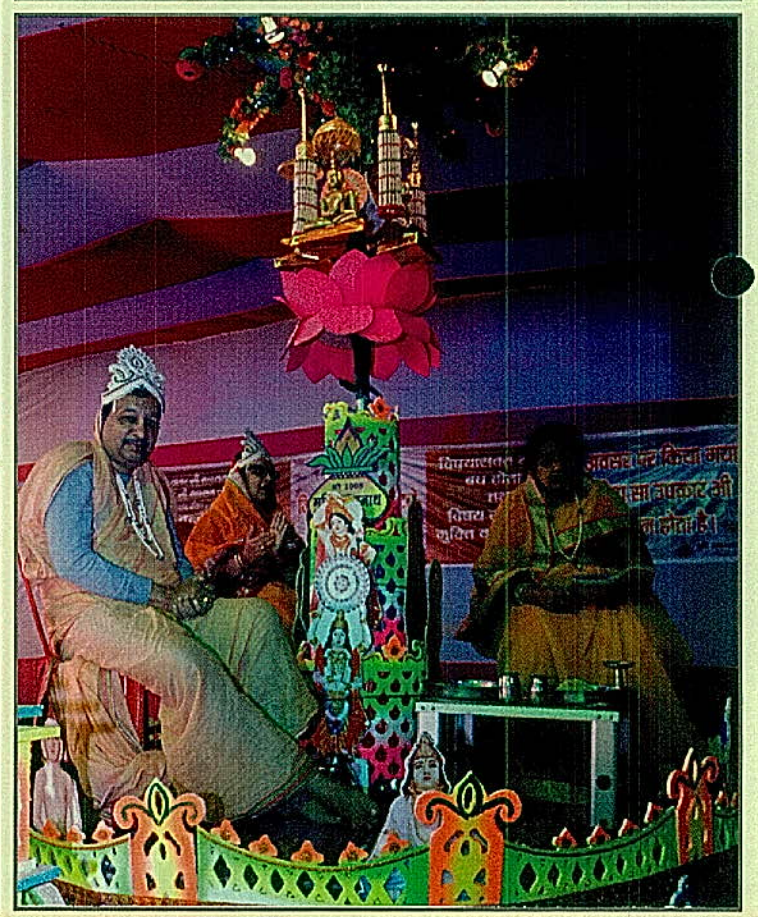

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

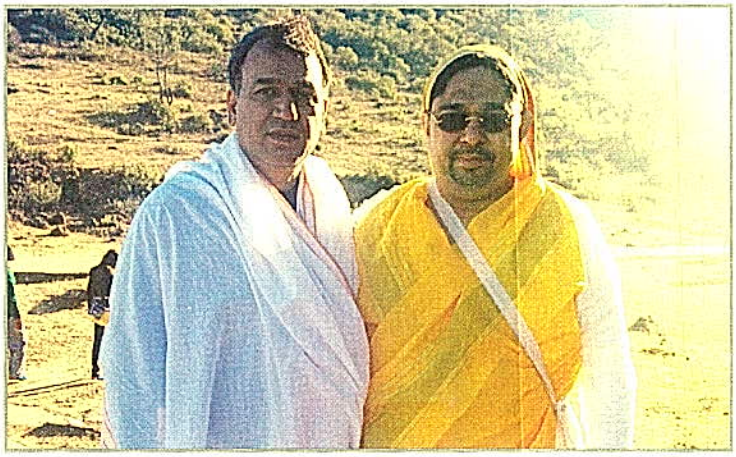

श्री अशोक जी पाटनी का सपरिवार इस विधान से चक्रवर्ती के रूप में जुड़ जाने से संपूर्ण आयोजन की शोभा में चार चांद लग गये। श्री अशोक जी ने [illegible]न के विभिन्न प्रसंगों में उदारतापूर्वक दान देते हुए विधान की संपूर्ण व्यय राशि प्रदान करने की महती घोषणा की जिसका अपूर्व स्वागत हुआ।

विधान के द्वितीय मुख्य समवशरण के चक्रवर्ती श्री पदम जी वीणा चूना वाले कोटा, श्री अशोक सुषमा पाण्ड्या, गिरिडीह, सौधर्म इन्द्र, श्री ललित प्राची चूनावाले कुबेर, श्री दीपक रूपल सेठी औरंगाबाद बेंगलोर महायज्ञनायक, श्री विवेक सुषमा सिंगापुर, ईशान इन्द्र, श्री अनिल संगीता सेठी किशनगढ़, सानत कुमार इन्द्र, श्री हर्ष प्रीती अजमेरा, हजारीबाग, माहेन्द्र इन्द्र के रूप में विधान के मुख्य पात्र बनने का सौभाग्य प्राप्त किया तथा इनका भावभीना सम्मान किया गया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव के गृहस्थ अवस्था के पिता श्री सुरेन्द्र जी सेठी, माता श्रीमती सोहनी देवी सेठी का शॉल, दुपट्टा, तिलक वंदन द्वारा अपूर्व स्वागत किया गया।

उक्त महामहोत्सव को सफल बनाने में कई संस्था एवं महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है जिनका नामाल्लेख पूर्वक भावभीना स्वागत किया गया।

सर्वप्रथम श्री महावीर प्रसाद जी सेठी, सरिया एवं श्री कन्हैयालालजी सेठी औरंगाबाद का उनके द्वारा तीर्थरक्षा, धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में अपूर्व योगदान के साथ गुणायतन एवं सेवायतन के प्रति उनके बहुमूल्य अवदान के लिए पूज्य गुरुदेव ने आशीर्वाद प्रदान किया तथा लोगों को उम्रके इस पड़ाव पर भी उनकी सक्रियता से प्रेरणा लेकर धर्म संस्कृति एवं समाज की सुरक्षा में जुड़ने की अपील की। श्री कन्हैयालालजी सेठी के सुपुत्र श्री दीपक सेठी एवं श्री महावीर प्रसाद जी सेठी के सुपुत्र श्री राजेश सेठी भी उनके पदचिह्नों का अनुकरण कर रहे हैं जो प्रशंसनीय है।

समारोह में आगत श्रद्धालुओं की संपूर्ण भोजन व्यवस्था श्री पप्पूजी गंगवाल, साढ़म के सौजन्य से की गयी, जिसकी सुन्दर व्यवस्था श्री प्रदीप जी पाटनी, रामगढ़ ने की, जिसकी लोगों ने मुक्तकण्ठ से सराहना की तथा पूज्य गुरुदेव ने साधुवाद प्रदान किया।

विधानाचार्य बाल ब्र. अशोक भैया जी और संघस्थ बाल ब्र. रोहित भैया जी, पं. राहुल शास्त्री का विधान की विधियों को प्रभावी ढंग से सम्पन्न करने के लिए भावभीना स्वागत किया गया। आ. रोहित भैया जी का इस महोत्सव को सम्पन्न करने में अथक प्रयास, परिश्रम एवं निर्देशन अत्यन्त सराहनीय रहा। पूज्य गुरुदेव ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

भगवान महावीर रिचर्स अस्पताल के चिकित्सकों एवं सेवकों ने श्रद्धालुओं को अपनी सेवा प्रदान की, मुनिश्री प्रमाणसागर सेवा संघ ललितपुर के उत्साही एवं सेवाभावी युवकों में पंकज पार्षद एवं शोभित जी के निर्देशन में समारोह की सभी व्यवस्थाओं में अपूर्व योगदान दिया।

रांची समाज, साढ़म समाज, दिग.जैन म्यूजियम जिनालय मधुबन, समवशरण मंदिर मधुबन, तेरहपंथी कोठी जिनालय मधुबन ने जिन प्रतिमाओ को समारोह के लिए ले जाने की स्वीकृति दी, जिससे अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

गया के सर्वश्री विजय कासलीवाल, राजेश विनायक्या, नरेन्द्र सेठी, संजीव सेठी, हजारीबाग के सर्वश्री सुनील अजमेरा, हर्ष अजमेरा एवं भागलपुर तथा मधुबन समाज के कतिपय लोगों का आयोजन को सफल करने में बहुत सक्रिय योगदान के लिए आभार व्यक्त किया गया।

पं. कुंथलाल जी रचित समवशरण विधान की पुस्त एवं गुणायतन गुणमाला सीडी का प्रकाशन श्रीमती लता गंगवाल मंत्री गुणायतन के सौभाग्य से हुआ। गुणायतन के मुख्य प्रशासक श्री सुभाष जैन, मुख्य वित्तीय प्रशासक श्री एन.एम.जैन, जयपुर; जनसंपर्क प्रभारी दिलीप बाकलीवाल, श्री एस.सी.जैन, श्री संजय जैन आदि समस्त व्यवस्थारत कर्मचारियों का तथा पारस चैनल के टीम एवं सुबोध संघी जबलपुर के योगदान की सराहना की गयी। लाईट, माइक, सफाई आदि व्यवस्था में लगे सभी सेवकों की सराहना की गयी।

समवशरण की कलात्मक रचना कटनी के श्री बबलू जैन ने बहुत ही आकर्षक ढंग एवं परिश्रम से की जिसके लिए उनकी मुक्त कण्ठ से सराहना की गयी। रात्रि समय वर्ष 2014 की अंतिम शाम गुणायतन के नाम विराट महाकवि सम्मेलन प्रख्यात राष्ट्रीय कवि श्री चन्द्रसेन जैन, भोपाल एवं उनके साथियों के द्वारा सम्पन्न हुआ जिससे लोगों ने अपार आनंद पूर्वक वर्ष 2014 को भावभीनी विदाई दी। 1 जनवरी, 2015. नववर्ष के मंगल प्रभात के साथ ही समवशरण में विभिन्न स्थानों से लाये गये जिन प्रतिमाओं को रथोत्सव पूर्वक अपने-अपने जिनालयों में विराजमान किया गया।

दर्शन ज्ञान और चारित्रवान सभी जिनेश्वर भावतीर्थ हैं (मूलाचार, गा.562)

स्वतंत्रता सेनानी, कर्मयोगी लाला दयाचन्द जैन, जगराओ (पंजाब) नहीं रहे

वयोवृद्ध समाज सेवी, कर्मयोगी, लाला दयाचन्द जैन (स्वतंत्रता सेनानी) अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण करके 13 दिसम्बर, 2014 को प्रभु चरणों में विलीन हो गये हैं। लाला जी का जन्म सन् 1921 ग्राम - बुच्चा खेड़ी, जिला- मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) में लाला गेंदामल जी जैन के यहाँ हुआ। लाला जी बचपन से ही बहुत होनहार कार्यों में अधिक रुचि लेने वाले, माता-पिता की सेवा, नित्य जिन दर्शन(पूजन अर्चन) करने वाले, धार्मिक प्रवृत्ति के बालक थे। युवावस्था में लालाजी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी से प्रभावित होकर उनकी महासभा में भाग लेने लगे और अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन मे उन्होंने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। उसके बाद गांधीजी ने गोहत्या, सत्याग्रह अभियान चलाया। लालाजी ने उसमें भी भाग लिया। गांधीजी से प्रभावित होकर सन् 1945 में चमड़े की बनी वस्तुओं और रेशम के कपड़ों का त्याग कर दिया। तब से ही खादी के कपड़े पहनते रहे। धोती-कुर्ता, टोपी, चप्पल, यहाँ तक की रूमाल जी खद्दर का ही रखते थे। लालाजी का विवाह इस्लामपुर घसौली, जिला- मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) निवासी लाला असर्फी लालजी जैन की सुपुत्री फूलमती जैन के साथ सम्पन्न हुआ। श्रीमती फूलमती जैन जी का जीवन बहुत ही सरल व धार्मिक था। वे भी अपनी सांसारिक यात्रा 1 जुलाई, 2007 को पूर्ण कर गयी थी। अपने मरणोपरांत उन्होंने दोनों नेत्र दान किये थे जिससे दो अंधेरी जिंदगियों को रोशनी मिली थी। लाला जी एक प्रसिद्ध उद्योगपति के साथ अनमोल हीरा थे। सामाजिक, व्यापारिक, राजनीतिक, धार्मिक क्षेत्रों में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे चारों क्षेत्रों के एक स्तम्भ थे। लालाजी सन् 1955 से उत्तर प्रदेश से पंजाब आकर अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया और व्यवसाय को बुलंदियों पर पहुंचाया। लालाजी के दो सुपुत्र राजेन्द्र कुमार जैन, सुशील कुमार जैन, दो बेटी संतोष जैन, सरोज जैन, दो पोते डॉ. मुनीष जैन, हर्ष जैन,दो पड़पोते, समर्थ जैन, पार्थ जैन, तीन पड़पोत्री भव्या जैन, हिया जैन, श्रीजैन, हरा भरा परिवार है। लालाजी का हर प्रकार का योगदान समाज सेवा के लिए सदैव रहता था और भी सारी संस्थाओं के बड़े-बड़े ओहदों पर आसीन थे। वे सन् 1940 में कांग्रेस पार्टी में शमिल हुए थे तब से ही बराबर कांग्रेस पार्टी की सच्ची सेवा करते चले आ रहे थे और पार्टी ने उन्हें कई ओहदे दिये। लालाजी पूरी सच्चाई, ईमानदारी से अपना फर्ज निभाया था। वे ऑल इंडिया दिगम्बर जैन परिषद पंजाब के अध्यक्ष भी थे। इसके अलावा सभी ऑल इंडिया जैन संस्थाओं से जुड़े हुए थे। उनके जाने से समाज को बहुत बड़ी क्षति पहुंची है उनकी पहचान सम्पूर्ण भारत में थी। वे जाते समय भी अपना फर्ज निभाना नहीं भूले। आज से 25 वर्ष पहले ही उन्होंने अपनी आंखें दान कर दी थी उनके मरणोपरांत परिवार वालों ने उनकी आंखें दान कर दी। वे जाते-जाते दो अंधेरी जिंदगियों को रोशन कर गये, ऐसे महान व्यक्तित्व के थे श्री दयाचन्द्र जी जैन। उनका कहना था :-

जिंदगी ऐसी बना, जिससे रहे दिलसाद तू।
तू न हो दुनिया में लेकिन दुनिया को आये याद तू।।

दानवीर, मुनिभक्त शेठ श्री शांतिलाल भाईचंदजी, ईडर का निधन

ईडर में श्री शांतिलालजी एक धर्मधुरंधर श्रावक थे। आपने 86 वर्ष में अंतिम श्वास लेकर स्वर्गवास सिधारे।

आपने अपने जीवन में बहुत ही प्रतिष्ठाएं करवाई थी। श्री गिरनारजी, चिंतामणिजी, केसरियाजी आदि अनेकानेक संघ निकालकर बड़ों का और पाठशाला के सभी बच्चों को यात्राएं करवाई। आपने 12 साल की सल्लेखना ली थी। आपका ऋण भुलाया नहीं जा सकेगा। आपने त्यागी भवन, गेट पर प्रतिमाएं लगाकर और बीमारी के समय अनेक लोगों को आयुर्वेदिक दवाएं देकर महान पुण्य का कार्य किया है। आप सात भाई हैं सभी साथ में रहते थे यह एक बड़ी उपलब्धि थी। आप एक बड़े उद्योगपति भी थे। समय - समय पर आचार्य भगवंतों, मुनिराजों की सेवा करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। आपका जीवन सादगी भरा था। सभी कार्यों में सकारात्मक सोच थी। समाज के जाने-माने कर्मठ कार्यकर्ता, समाजश्रेष्ठी, परिवार के मुखिया थे।

आपके निधन से जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। आपके आत्मा को चिर शांति मिले, ऐसी प्रभु को प्रार्थना है।

- अश्विन पी. गांधी, ईडर

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्त्रागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

Shri Rajiv Kishore Shah, Mumbai

Shri Vijay Kumar Goutamraoji Aherkar, Aurangabad

Shri Pramod Prakash Dere, Aurangabad

Shri Pankaj K. Shah, Mumbai

Shri Jindas Ambadas Mogale, Aurangabad

Shri Devendra Badichandji Rajawat, New Mumbai

Shri Rajesh Natwarlal Shah, Jalgaon

Shri Navneet Inderchandji Gangwal, Dombivali

Shri Vardhman Kumar Shantilal Kasliwal, Dombivali

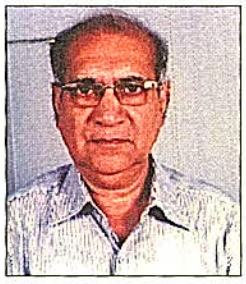
Shri Vijay Kumar Sumatichand Jain, Mumbai

Shri Atul Nirmal Jain, Mumbai

Shri Sanjay Mahavir Prasadji Sethi, Chennai

Shri Devendra Kumar Jain, Delhi

Smt. Poonam Devendra Kumar Jain, Delhi

Shri Shital Vardhman Lohade, Pune

Shri Manish Harakchandji Barjatya, Pune

Shri Prashant Sharadchandra Pande, Pune

Shri Sandesh Rishabh Gangwal, Pune

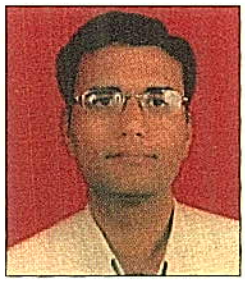
Shri Pankaj Kalyanmal Patni, Pune

Shri Lalit Kacharulal Patni, Pune

Shri Manish Rajmal Kasliwal, Lonawala

Shri Mahendra Pannalal Gangwal, Acurdi

Shri Padam Kumar Jaikumar Ajmera, Osmanabad

Shri Vinay Dhanyakumar Gandhi, Phaltan

Shri Rupesh Jaiprakash Doshi, Phaltan

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

आजीवन सदस्य

Shri Virendra (Pravin) Praduman Doshi, Phaltan

Shri Surendra Dnyanchandra Doshi, Phaltan

Shri Ajay Arvind Shah, Phaltan

Dr. Ravindra Vijay Kumar Doshi, Phaltan

Shri Ajit Ramanlal Doshi, Phaltan

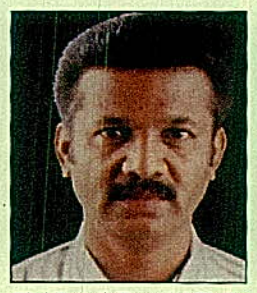
Shri Rajesh Ratanlal Shah, Phaltan

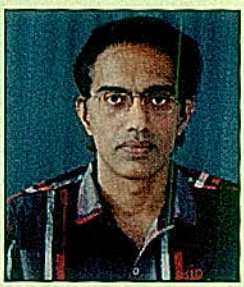
Shri Rajendra Kantilal Kothari, Phaltan

Shri Amit Ashok Doshi, Phaltan

Shri Jitendra Rajendra Pande, Paithan

Shri Dhananjay Ramchand Shah, . Phaltan

Shri Kailas Bharat Doshi, Phaltan

Shri Navjeevan Ratanchand Doshi, Akluj

Shri Mahadhaval Ashok Gandhi, Akluj

Sou. Shubhangi Sunil Phade, Shreepur

Sou. Savita Milind Doshi, Kolki

Shri Sunil Shantilal Gandhi, Akluj

Shri Meghraj Navinchand Phade, Akluj

Shri Nilesh Jinraj Gandhi, Akluj

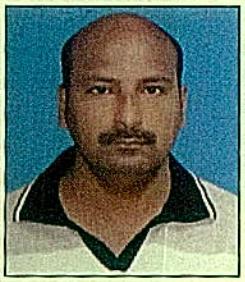
Shri Yogesh Pradeep Gandhi, Akluj

Shri Mihir Bahubali Gandhi, Akluj

Shri Bahubali Praveenchandra Gandhi, Akluj

Shri Suraj Sukumar Phade, Akluj

Shri Jinendra Pradip Gandhi, Akluj

Shri Mahavir Vijaykumar Shah, Shripur

Shri Indrajit Jaikumar Phade, Akluj

जिन लोगों ने तप करके शक्ति और सिद्धि प्राप्त कर ली है, वे मृत्यु को जीतने में भी सफल हो सकते हैं (तिरुवल्लूर)

आजीवन सदस्य

Shri Manilal Mohanlal Gandhi, Akluj

Shri Rajendra Hirachand Chankeshwara, Akluj

Dr. Shrenik Sharad Shah, Indapur

Sou. Sunita Pramodkumar Kasliwal, Aurangabad

Ku. Ankita Pramod Kumar Kasliwal, Aurangabad

Ku. Namita Pramod Kumar Kasliwal, Aurangabad

Shri Manoj Vilas Pahade, Paithan

Shri Kulbhushan Wajrachand Jain, Aurangabad

Shri Manoj Punamchand Chhabda, Aurangabad

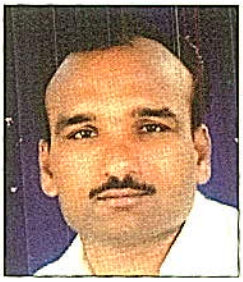
Shri Manoj Kumar Foolchand Dagada, Aurangabad

Shri Dilip Shantilalji Kasliwal, Aurangabad

Shri Sachin Manikchand Badjatye, Aurangabad

Shri Chetan Bahubali Gangwal, Aurangabad

Shri Vinod Hirachand Kasliwal, Aurangabad

Shri Sanjay Kumar Hukumchand Patni, Aurangabad

Shri Bipin Kasturchand Badjate, Aurangabad

Shri Vilas Kantilal Sahuji, Aurangabad

Shri Prakash Inderchand Binayake, Selu

Sou. Madhuri Vijay Papdiwal, Paithan

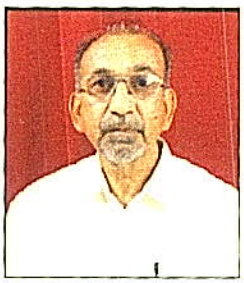
Shri Babanlal Shyamlalji Godha, Paithan

Shri Vijay Pannalal Papdiwal, Paithan

Shri Anup kumar Kasturchand Patni, Aurangabad

Sou. Sushma Bharat Kumar Thole, Aurangabad

Shri Ashok Kumar Amlokchand Pande, Aurangabad

Shri Pawan Madanlalji Chandiwal, Aurangabad

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।